चकमक

मई, 1992 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 4.00

वीरेन्द्र सिंह, सातवीं, नरवर, उज्जैन

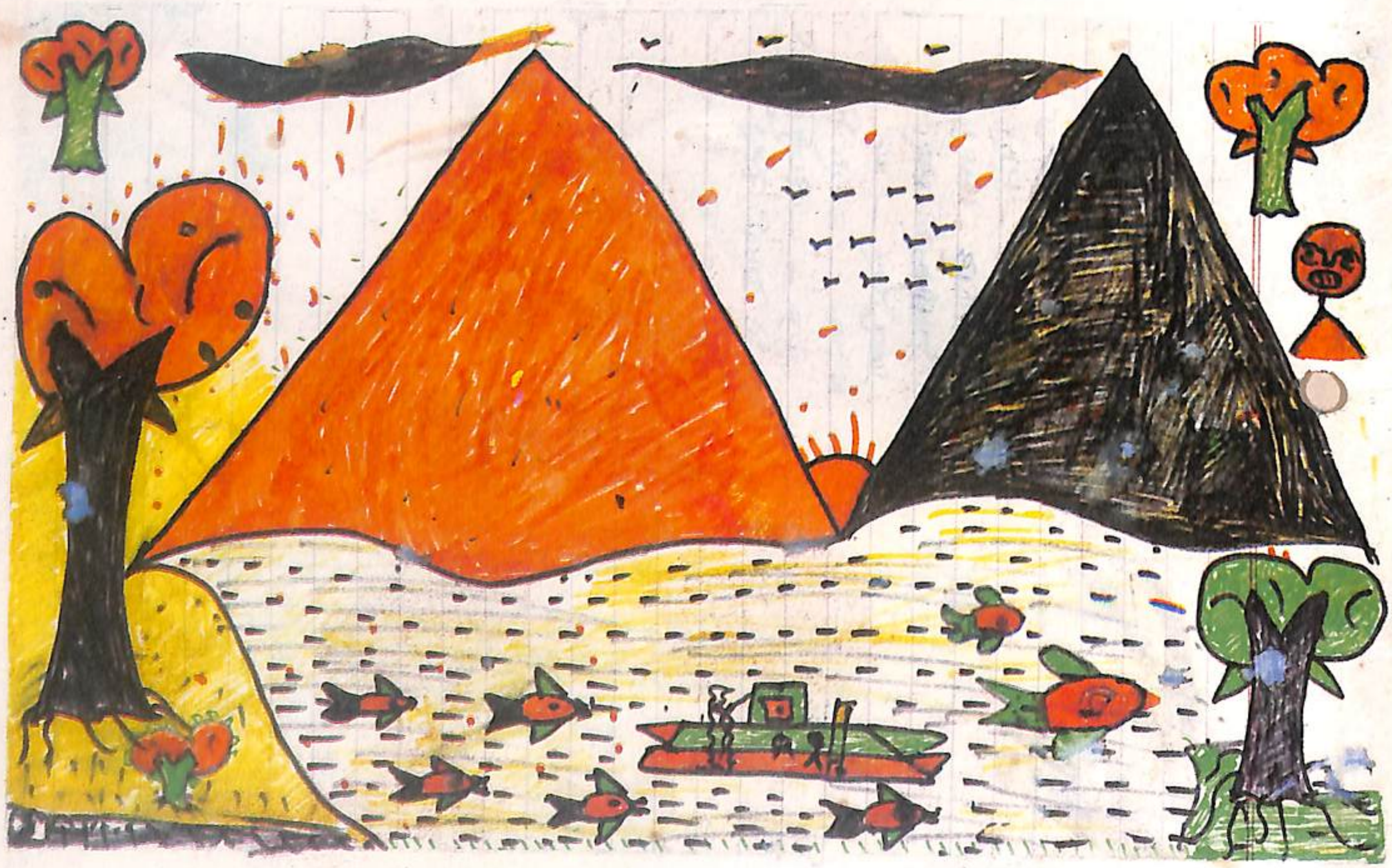

रवीन्द्र गुप्ता, छठवीं, खिरकिया, होशंगाबाद

आपस की बात

विभिन्न कारणों से चकमक के फुटकर मूल्य तथा वार्षिक चंदे की दर में वृद्धि करने का निर्णय लेना पड़ रहा है।

जून, 1992 से चकमक की एक प्रति का दाम रु. 5.00 होगा।

वार्षिक चंदा रु. 50.00 तथा अर्धवार्षिक रु. 25.00 होगा। डाक व्यय पहले की तरह हम ही देंगे।

जिन पाठकों का चंदा इस अंक यानी मई, 92 के बाद के किसी माह तक का है, उन्हें शेष अंकों के लिए अतिरिक्त राशि नहीं देनी है। हां, अगले साल के लिए अपना चंदा कृपया नई दर से भेजें। जिन पाठकों का चंदा इसी अंक से समाप्त हो रहा है, वे भी कृपया नई दर से चंदा भेजें।

❑ **संपादक**

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-7 अंक 11 मई, 1992

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मोहन श्रीवास्तव

चकमक का चंदा
एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फ़ोन : 563380

कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

इस अंक में..

विशेष

8 ❑ इंटरव्यू चूहे जी का

कविता

20 ❑ बांसुरीवाला

कहानियां

26 ❑ चूहा और मैं
35 ❑ हमने मेला देखा!

हर बार की तरह

28 ❑ मेरा पन्ना
30 ❑ क्यों..क्यों..20
31 ❑ चित्रकथा
33 ❑ हमारे वृक्ष : आम
34 ❑ खेल पहेली

और यह भी

24 ❑ खेल खेल में
32 ❑ एक मज़ेदार खेल

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रो में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पार्क की सैर

मैं और मेरी छोटी बहन को पार्क जाने का बहुत शौक़ है। पार्क में बहुत से लोग घूमने आते हैं। मुझे पार्क में खेलना बहुत अच्छा लगता है। मेरे घर के पास चार पार्क हैं। मैं अपनी मम्मी से रोज़ पार्क चलने की जिद करता हूं पर मेरी मम्मी रोज़ पार्क लेकर नहीं जाती क्योंकि उन्हें घर के कामों से फुरसत नहीं मिलती। मेरे पापा कभी-कभी हम सबको लेकर जाते है?

हम वहां आइसक्रीम खाते हैं, मूंगफली खाते हैं। और मेरे पार्क में कई दोस्त बन जाते हैं। उनके साथ खेलने में बहुत मज़ा आता है। एक दिन पार्क में ज़ोर से पानी आ गया। हमने वहां इंद्रधनुष भी देखा और गीले होकर घर आए। मेरी बहन रोने लगी उसे सर्दी लग गई थी। फिर वह ठीक हो गई।

❑ हितेश चौहान, चौथी, भोपाल

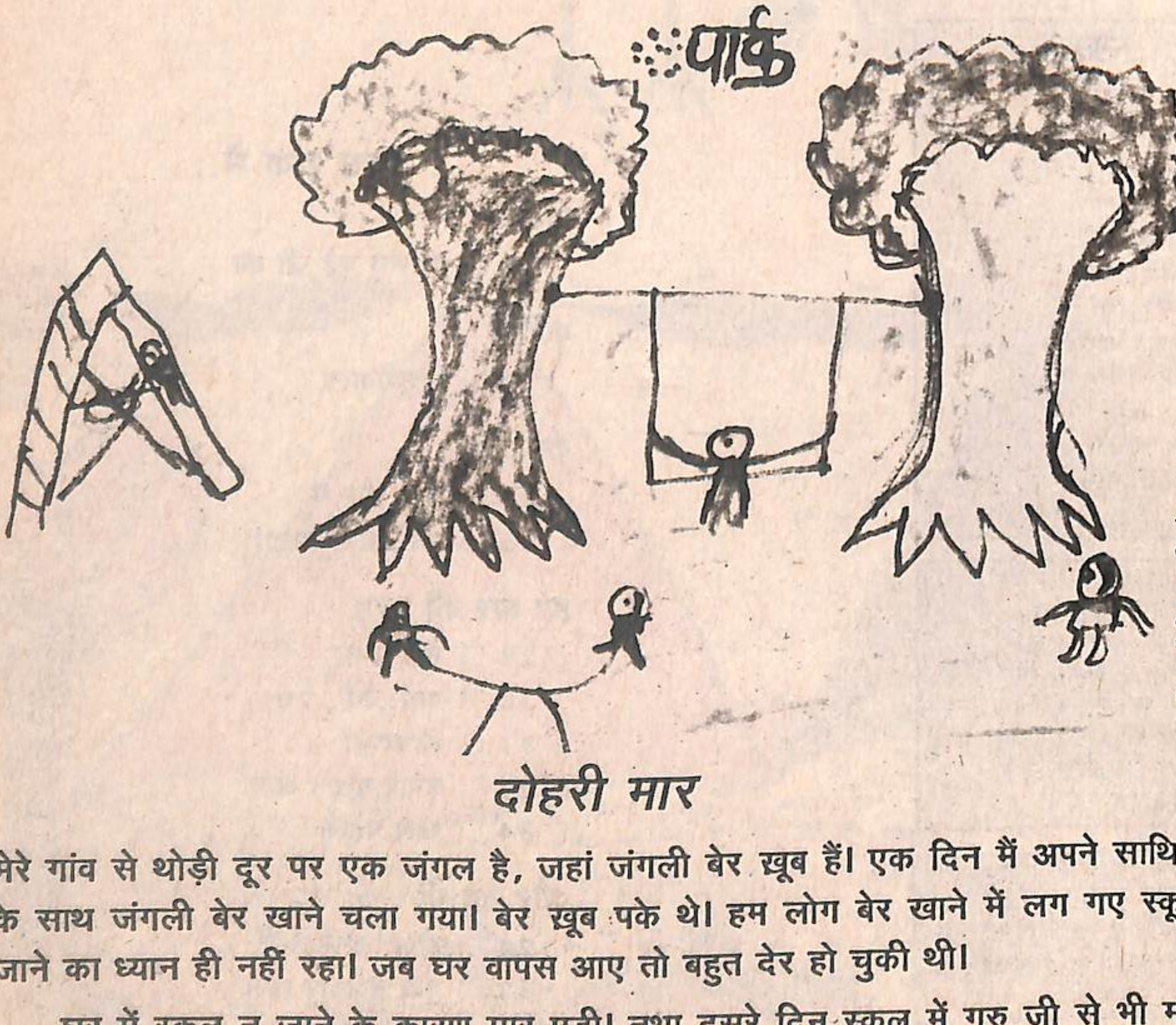

कविता सोनी, आठवीं, देवास

दोहरी मार

मेरे गांव से थोड़ी दूर पर एक जंगल है, जहां जंगली बेर ख़ूब हैं। एक दिन मैं अपने साथियों के साथ जंगली बेर खाने चला गया। बेर ख़ूब पके थे। हम लोग बेर खाने में लग गए स्कूल जाने का ध्यान ही नहीं रहा। जब घर वापस आए तो बहुत देर हो चुकी थी।

घर में स्कूल न जाने के कारण मार पड़ी। तथा दूसरे दिन स्कूल में गुरु जी से भी मार पड़ी। इस प्रकार जंगली बेर ने मुझे दोहरी मार लगवाई।

❑ शैलेष सिंह परिहार, पांचवी, देवरी हटाई, कटनी

मेरा पन्ना

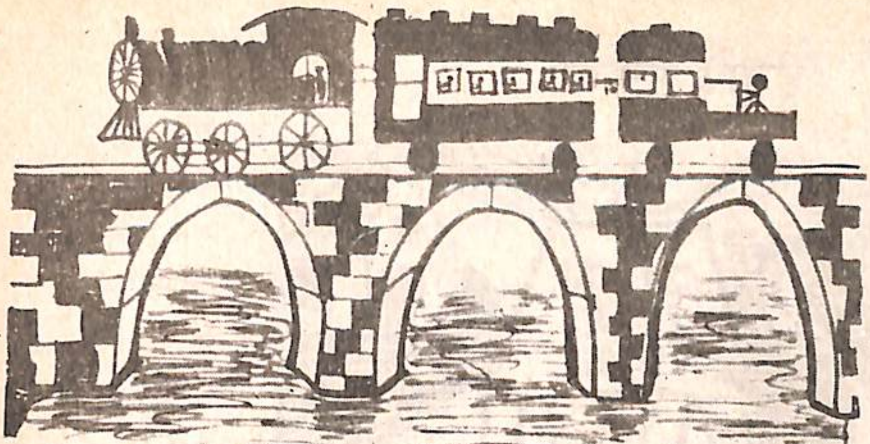

अम्बर खरे, दसवीं, देवास

हितेश चौहान, चौथी, भोपाल

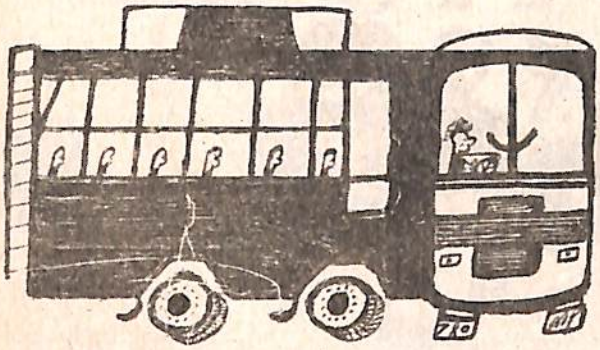

चंदरसिंह सैंधव, सातवीं, चापड़ा, देवास

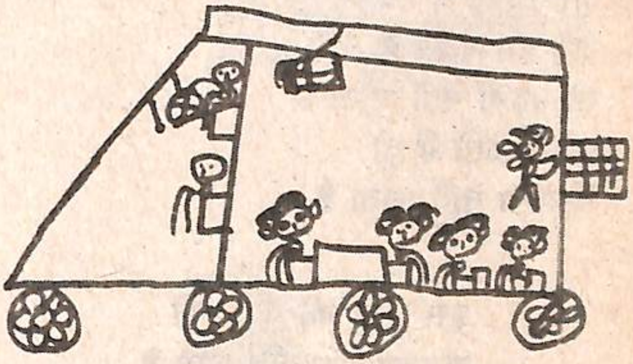

संजय राजवानी, उमरिया, शहडोल

राजेश रेकवाल, छठवीं, मानकुंड, देवास

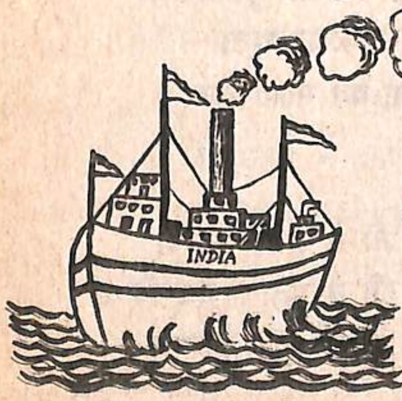

हिम्मत कुमार, आठवीं, पंजाब

कीर्ति चौहान, दूसरी, टिमरनी

हमारे गुरुजी

विद्या कनोडिया, आठवीं, ग्वालियर

जब हम पढ़ते हैं
तो पढ़ना नहीं आता है
हम लिखते हैं तो
लिखना नहीं आता है

इस तरह की बातों को
सुनकर गुरू जी गुर्राते हैं,
लाल-लाल आंखें हैं उनकी
आंखों को हमें दिखाते हैं।

मूंछें दाढ़ी हमने बनाई
एक आंख बनाना भूल गए
चित्र देखकर गुरू जी ने
गुस्से में चांटा लगाया था

एक दिन उन्होंने बिल्ली का
चित्र बनाना सिखलाया था
तभी भूल से हमने
गुरू जी का चित्र बनाया था

चांटे की आवाज़ को सुनकर
लड़कों ने धूल फैंकना शुरू किया
उसी धूल में से पत्थर छूटा
उससे गुरू जी का माथा फूटा

गुरू जी ने डंडा उठाया
गुरू जी ने पढ़ाना बंद किया
हमने पढ़ना शुरू किया।

❑ सुरेश चंद्र रावत, दसवीं, लहर्रा, मुरैना

कभी ख़ुश, कभी ग़ुस्सा

हम तीन बहनें हैं। एक का नाम मधुबाला, दूसरी का नाम शिशुबाला, तीसरी का नाम किरणबाला है। हमारी मम्मी कभी नाराज़ रहती हैं कभी ख़ुश। एक दिन मम्मी ने हमें पांच रुपए दिए और कहा कि तुम सब मिलकर चीज़ खा लेना और दो रुपए वापस दे देना। उस दिन मम्मी बहुत ख़ुश थीं।

हम रुपए लेकर चल दिए। दुकान पर पहुंचे तो मधुबाला ने कहा, ''मैं ब्रेड खाऊंगी।''

ब्रेड दो रुपए की थी। मैंने उसे ब्रेड दिलवा दिया। फिर किरणबाला ने कहा, ''मैं समोसा खाऊंगी।''

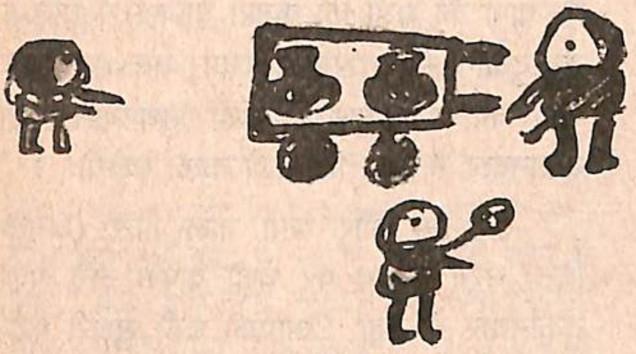

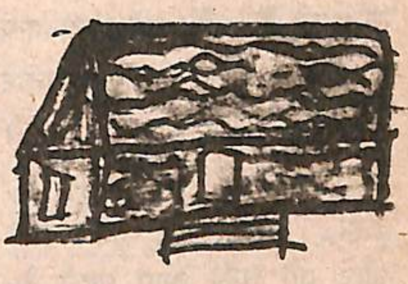

कविता सोनी, आठवीं, देवास

समोसा भी दो रुपए का था। मैंने उसे समोसा दिला दिया। फिर मैंने एक टिकिया खा ली। सारे रुपए ख़त्म हो गए। हमें याद भी नहीं था कि मम्मी ने कहा था कि दो रुपए वापस ले आना। अब हम घर गए तो मम्मी ने पूछा, ''बाक़ी रुपए लाओ।''

मैंने कहा, ''मधुबाला के पास हैं।''

मधुबाला ने कहा, ''किरणबाला के पास हैं।''

मम्मी ने किरणबाला से पूछा तो किरणबाला ने कहा, ''हमने तो सभी की चीज़ खा ली।''

मम्मी को गुस्सा आ गया। फिर हमारी पिटाई हुई।

□ शैलेश कुमारी, चौथी, नंदनगरी, दिल्ली

घड़ी हुई ख़राब

पारूल

अचानक एक दिन हमने देखा कि जो घड़ी अंदर के कमरे में टंगी है उस घड़ी में पांच बज रहे हैं। और जो घड़ी पापा पहने हैं उसमें तीन बज रहे हैं। यह देखकर हम हैरान रह गए। तब हमने अपने पापा से बात करने का निश्चय किया। हम पापा के पास गए। हमने कहा, ''पापा अंदर वाली घड़ी में पांच बजे हैं, और जो घड़ी आप पहने हैं उसमें तीन बजे हैं।''

तब पापा बोले, ''यह कैसे हो सकता है कि दोनों घड़ियों के टाइम बदल जाएं।''

हमने कहा, ''दोनों घड़ियां देख लो।''

पापा ने दोनों घड़ियां देखीं तो सचमुच दोनों घड़ियों के टाइम बदले हुए थे। यह देखकर हमारे पापा चकित रह गए। पापा ने कहा, ''पारूल तुम सच कह रही हो।''

आख़िर थोड़ी देर बाद यह सलाह हुई कि पापा की घड़ी को कटरा बाजार में घड़ियों की दुकान में सुधरवाया जाए। तब हम और पापा कटरा बाज़ार में घड़ी सुधरवाने गए। दुकानदार ने कहा कि घड़ी कल मिलेगी।

तब हम और पापा कल फिर (अगले दिन) उसी दुकान पर घड़ी वापस लेने गए। दुकानदार ने कहा, ''आपकी घड़ी सुधरी पड़ी है।''

यह कह कर दुकानदार ने घड़ी वापस कर दी। घड़ी लेकर हम वापस घर आए। सोमवार तक पापा की घड़ी बिलकुल ठीक हो गई। जिस दिन घड़ी ठीक हो कर घर आई, उस दिन मम्मी, पापा और हमने ख़ुशी मनाई।

❑ पारुल, सात वर्ष, टीकमगढ़

मेरा पन्ना तुम्हारी अपनी रचनाओं यानी चित्र, कहानी, कविता अदि का पन्ना है! अगर तुमने अभी तक अपनी रचना नहीं भेजी है, तो आज ही भेजो!

और हां, अब तो रचना प्रकाशित होने पर छह माह तक चकमक उपहार में भेजी जाती है।

❑ संपादक

छिपकली की मौत

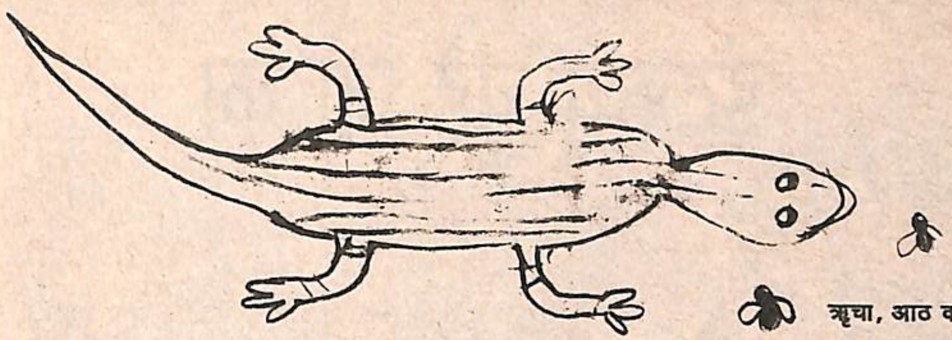

ऋचा, आठ वर्ष, भोपाल

मैं जिस छोटी-सी बिल्डिंग में किराए से रहता हूं, उसमें हमारे अलावा कुछ अन्य लोग भी किराए से रहते हैं। पापा जब शाम को स्कूल से लौटकर घर आते तो अपने साथ खाने के लिए कुछ न कुछ लाते हैं। इसलिए मेरे छोटे भाई-बहन शाम को उनके लौटने का इंतजार करते हैं।

एक शाम को हम लोग उनका इंतजार कर रहे थे कुछ देर बाद पापा आए, परंतु आज वे अपने साथ कुछ नहीं लाए थे। उन्होंने मेरी छोटी बहन से कहा, ''आज कुछ लोगों के साथ चला गया इसलिए याद नहीं रहा। तुम नीचे जाकर दुकान से कुछ ले आओ।''

यह सुनकर वह खुश होकर नीचे जाने लगी पर जैसे ही वह सीढ़ियों से उतरने लगी तभी उसकी नज़र नीचे सीढ़ियों पर एक छिपकली पर पड़ी। छिपकली से डर कर वह वापस आ गई और कहने लगी, ''मैं नीचे नहीं जाऊंगी।'' सीढ़ियों पर छिपकली पड़ी है।

पापा ने कहा, ''तुम बेकार ही छिपकली से डर रही हो, चलो मैं उसे भगाए देता हूं।''

पापा छिपकली को हट-हट करके भगाने लगे पर छिपकली अपनी जगह से टस से मस न हुई। शोरगुल सुनकर अन्य किराएदार तथा मकान मालिक भी बाहर निकल आए। और ''क्या हुआ'' ''क्या हुआ'' कहने लगे। छिपकली को देखकर सभी लोग कहने लगे, ''अरे! अरे! उसके पास मत जाना, यह काली छिपकली बहुत ख़तरनाक होती है।''

छिपकली को भगाने की बात तो दूर कोई उसके निकट भी नहीं जा रहा था। पापा ने नीचे वाले किराएदार से कहा, ''आप इसे ऊपर भगा दीजिए। यहां आने पर मैं उसे मार दूंगा।''

पर उन्होंने छिपकली के पास जाना उचित नहीं समझा। छिपकली तो अपनी जगह बैठी रही। उसे भगाने या मारने के बजाय सब लोग छिपकली के बारे में अपना-अपना मत प्रकट करने लगे। कोई कह रहा था कि छिपकली को मारने से पाप होता है, तो किसी ने कहा छिपकली ख़तरनाक होती है उसके पास नहीं जाना चाहिए।

इतनी देर से मैं शोरगुल सुन रहा था तब मैं बाहर देखने आया कि आख़िर माजरा क्या है? मैंने देखा छिपकली तो ज़िंदा पड़ी है और सब लोग बहस कर रहे हैं।

वहां पर सभी लोग अपने–अपने जीवन की घटनाएं सुनाने लगे। कोई कह रहा था कि मेरे ऊपर नहाते समय छिपकली गिरी, तो कोई कहता मेरे ऊपर खाना खाते समय छिपकली गिरी। सभी लोग अपनी बातों के द्वारा अपना उत्साह ज़ाहिर कर रहे थे। कुछ देर बाद मकान–मालिक का लड़का आया और ऊपर आने के लिए जब सीढ़ियों के पास आया तो छिपकली देखकर डर गया। पर आस-पास सभी लोगों को खड़ा देखकर डर को छुपाया और हिम्मत कर छिपकली को ऊपर भगाया। ऊपर आने पर पापा ने उसे चप्पल से मार दिया। सभी लोगों ने उस लड़के व पापा की हिम्मत की प्रशंसा की। तब मैंने सोचा, 'यदि इस छिपकली को मारने से इतनी वाह-वाही मिलनी थी तो मैं पहले ही उसे आसानी से मार सकता था। बेकार में इतना शोरगुल हुआ।'

❑ दीपक खरे, महाराजपुर, छतरपुर

इंटरव्यू चूहे जी का

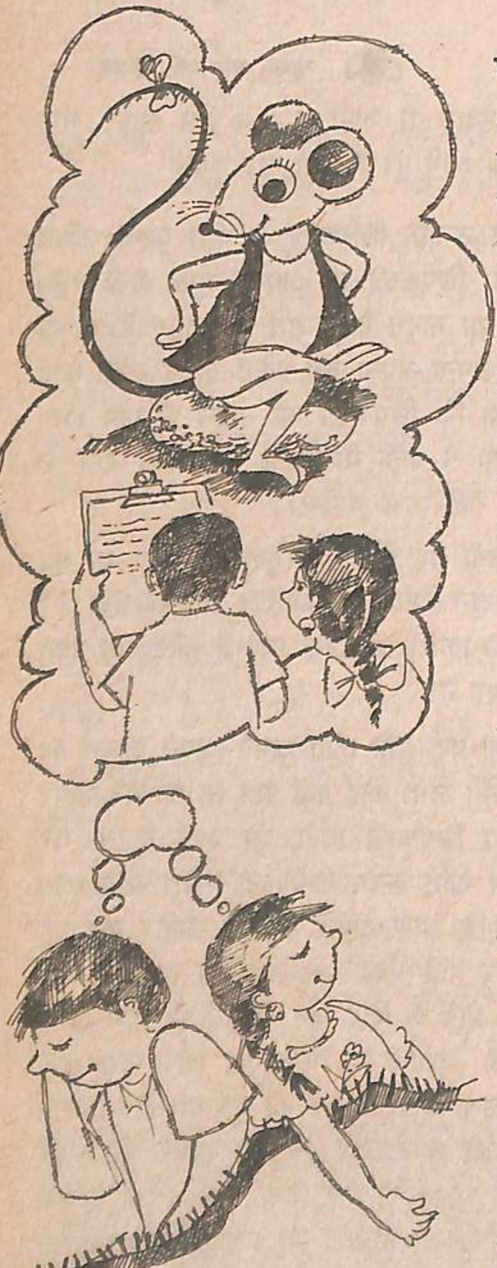

घर में बहुत चूहे हो गए थे। दिन भर वे धमा-चौकड़ी मचाते रहते। अलमारी के नीचे से निकल कर संदूक के नीचे घुस जाते। कभी संदूक के नीचे से निकलकर छलांग मारते हुए बिस्तरों पर जा पहुंचते। रात भर रसोई में खटर-पटर की आवाज़ आती रहती। सुबह कुछ न कुछ फैला हुआ मिलता।

मोलू और गुनगुन को चूहों की यह धींगा-मस्ती बहुत मज़ेदार लगती। पर उनकी मां बहुत परेशान रहतीं। ऐसी ही एक रात दोनों बिस्तर पर पड़े चूहों की रेस का आनंद ले रहे थे। थोड़ी देर बाद दोनों नींद में खो गए। उस रात दोनों ने एक मज़ेदार सपना देखा। सपने में दोनों पत्रकार बनकर चूहों का इंटरव्यू लेने पहुंच गए। अपना वह इंटरव्यू उन्होंने चकमक को लिख भेजा। तुम भी पढ़ो!

मोलू : सुनिए चूहे जी, क्या हम आपसे कुछ बातचीत कर सकते हैं?

चूहा : बातचीत, कैसी बातचीत? कौन हैं आप?

गुनगुन : लो हमारे ही घर में रहते हो और हमें ही नहीं जानते?

मोलू : कोई बात नहीं, बता देते हैं। हम हैं गुनगुन और मोलू। हम आपका इंटरव्यू लेना चाहते हैं।

चूहा : किसलिए?

गुनगुन : चकमक पत्रिका के लिए। चकमक तो आपने देखी ही होगी?

चूहा : हां, हां, वही न जो तुम्हारी किताबों की अलमारी में पड़ी रहती है।

मोलू : हां, वही।

चूहा : हां, उसका तो मैंने बहुत स्वाद लिया है। कुतर-कुतर कर।

गुनगुन : तो शुरू करें।

चूहा : भई, पहले मुझे कुछ खाना खिलाओ, भूख लग रही है गुनगुन दौड़कर गई और एक रोटी उठा लाई। फिर उसके टुकड़े-टुकड़े करके डालने लगी चूहे जी प्रेम से खाने लगे।

घरेलू चूहा। यह अपनी लंबी पूंछ के कारण आसानी से पहचाना जाता है। वर्षों से यह मानव के आसपास रहता आ रहा है। यह घर में रखे फ़र्नीचर, अलमारी, संदूकों आदि के पीछे तथा कबाड़े में निवास करता है। चुहिया साल में चार से छह बार बच्चे देती है।

एक भूरी चुहिया अपने बच्चों के साथ। भूरे या नाली में रहने वाले चूहों के नाम से पुकारे जाने वाले ये चूहे आकार में घरेलू चूहों से लगभग तीन गुना बड़े होते हैं। ये रात को अधिक सक्रिय होते हैं। कालोनी बनाकर रहते हैं और भोजन भी जमा करते हैं। चुहिया लगभग हर माह सात से आठ बच्चे देती है।

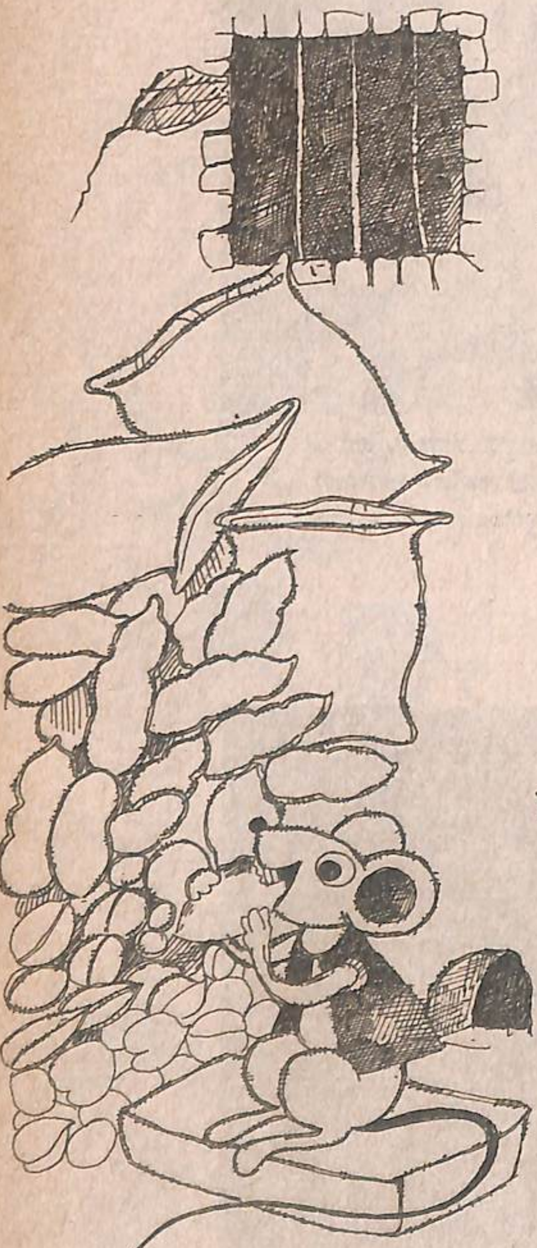

गुनगुन : आप रोटी के अलावा और क्या-क्या खाते हैं?

चूहा : भई मैं हर तरह का अनाज खाता हूं। चाहे वह घर में रखा हो, खेत में रखा हो या खलिहान या भंडार में।

मोलू : कितनी ख़ुराक है आपकी?

चूहा : वैसे तो हमारी प्रतिदिन की ख़ुराक 25 से 40 ग्राम की है। पर हमें पूरा दाना खाने में आनंद नहीं आता। इसलिए हम कुतर-कुतर कर खाते हैं। अगर आप आंकड़ों में रुचि रखते हों, तो बताऊं। मुझे याद हैं, पिछले दिनों मैंने एक अख़बार को कुतरते हुए पढ़ लिए थे।

गुनगुन : हां हां, बताइए।

चूहा : सात चूहे मिलकर एक दिन में जितना खाते हैं, उतना एक वयस्क आदमी का एक दिन का भोजन होता है। जबकि एक चूहा अपने आठ माह के जीवन काल में लगभग तीन से चार किलोग्राम अनाज खा लेता है।

मोलू : अपनी उत्पत्ति के बारे में कुछ बताएं।

चूहा : इसमें बताना क्या है। हम मनुष्य से काफ़ी पहले पृथ्वी पर अस्तित्व में आ गए थे। हमारे बाप-दादा बताते हैं कि सर्वप्रथम हम मध्य या दक्षिण एशिया में जन्में थे। अब तो हम सारे विश्व में फैले हुए हैं। चाहे ठंडा ध्रुव प्रदेश हो चाहे रेगिस्तान। हम मनुष्य द्वारा विकसित सभ्यता के हर कोने में मौजूद हैं।

गुनगुन : कितनी प्रजातियां हैं आपकी?

चूहा : दुनिया में क़रीब साढ़े पांच सौ प्रजातियां हैं हमारी। और भारत में क़रीब सत्तर।

मोलू : क्या सभी प्रजातियों के चूहे रंग-रूप, आकार में आपके जैसे ही होते हैं?

चूहा : हमारे निवास स्थान के अनुसार हमें घरेलू छोटे चूहे और खेतों के चूहे के नाम से जाना जाता है। हमारा रंग प्रायः काला, भूरा या लाल-भूरा होता है। भूरे चूहे शरीर से काफ़ी मज़बूत होते हैं। भूरे चूहों के कान तथा पूंछ छोटी होती है। ये नदियों व नहरों के किनारे भी आराम से रहते हैं। काले या घरेलू चूहे भूरों की अपेक्षा अधिक लंबे तथा छरहरे शरीर के होते हैं। इनकी पूंछ एवं कान लंबे होते हैं। सामान्यतः हमारी लंबाई 15 से 45 से.मी. तथा पूंछ की लंबाई 10 से 20 से.मी. होती है। और वज़न भी जान ही

फसल काटने वाला चूहा। खेतों में रहता है। आकार में छोटा होता है। अपनी पूंछ की मदद से फसल पर लटक जाता है और फिर मज़े से दाने खाता है। खेतों में ही घर बनाता है। लेकिन सर्दियों के मौसम में पूरा परिवार ज़मीन के नीचे बने घर में रहता है। यह अनाज के अलावा फल, फूलों की कलियां तथा कीड़े-मकोड़े भी खाता है। चुहिया गर्मियों में दो से तीन बार बच्चे देती है।

मैदानी चूहा। मैदान में पाया जाने वाला यह चूहा अपने बड़े कान, लंबी पूंछ तथा फैली आंखों से पहचाना जाता है।

लो। औसत वज़न 200 से 500 ग्राम तक होता है।

गुनगुन : सुना है कि आप अपने परिवार की संख्या में बड़ी तेज़ी से वृद्धि कर लेते हैं।

चूहा : सही सुना है। एक चूहिया वर्ष में 4 से 5 बार गर्भ धारण करती है और एक बार में 8 से 10 बच्चे जन्म लेते हैं। हालांकि ये सब ज़िंदा नहीं रहते। लेकिन फिर भी हमारे सिर्फ़ एक जोड़े से जन्में चूहों और उनसे जन्मते गए चूहों से तीन वर्ष की छोटी अवधि में ही दो करोड़ चूहे पैदा हो सकते हैं। एक चूहा 4 से 6 माह की उम्र में ही प्रजनन क्षमता प्राप्त कर लेता है।

मोलू : अपनी कुछ ख़ूबियों के बारे में बताएं।

चूहा : ख़ूबियों के तो भंडार हैं हम।

गुनगुन : जैसे?

चूहा : चाहे जैसी भी परिस्थिति हो हम अपने आपको उसके अनुरूप ढाल लेते हैं। हालांकि हम कुछ दूर तक ही देख सकते हैं लेकिन गंध और आवाज़ से काफ़ी दूर से अनुमान लगा लेते हैं।

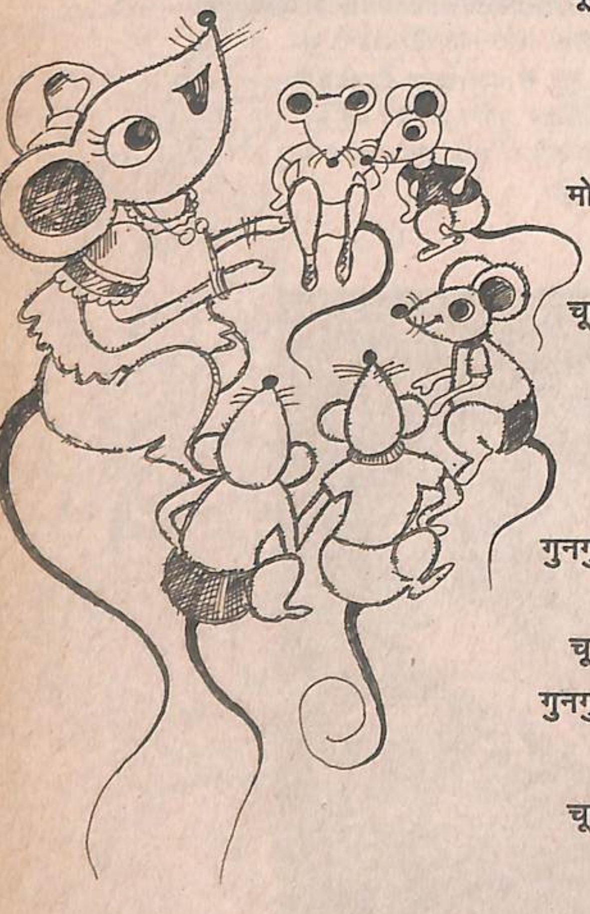

मोलू : अच्छा हमने आपको बहुत ऊंचाई से कूदते देखा है, क्या चोट नहीं लगती?

चूहा : नहीं, बिलकुल नहीं। हम तो 40 से 45 फुट ऊपर से भी कूद सकते हैं। इतना ही नहीं किसी भी खड़ी सतह पर चढ़ सकते हैं। तीन दिन तक पानी में रह सकते हैं और पानी के तेज़ बहाव के विरुद्ध दिशा में मीलों आसानी से तैर सकते हैं।

गुनगुन : अच्छा अगर आप बुरा न मानें तो यह बताएं कि आप इतने शक्की मिज़ाज क्यों हैं?

चूहा : शक्की मिज़ाज क्या मतलब?

गुनगुन : मेरा मतलब है आप हर वस्तु को कुतर-कुतर कर क्यों देखते हैं?

चूहा : इसमें शक्की मिज़ाज की क्या बात है, तुम भी तो चखकर देखती हो न खाने की चीज़? इसी तरह हम भी कुतर कर देखते हैं। खाने लायक हुई तो खाई, नहीं तो छोड़ दी।

मोलू : चूहे जी लगता है आप असली बात टाल रहे हैं। हमने सुना है आप तो बिजली के तार भी कुतर डालते हैं, अब बिजली के तार भला क्या खाने की चीज़ हैं?

भारत में पाए जाने वाले कुछ प्रमुख चूहे

जंगली चूहा। आकार में लगभग एक फुट लंबा होता है।

साधारण मैदानी चूहा। मैदानों के अलावा बगीचों में पाया जाता है। आकार में 5 से 8 से.मी. लंबा होता है।

झाड़ियों में रहने वाला चूहा।

नोंकदार रोओं वाला चूहा। इसके शरीर पर पाए जाने वाले रोएं नुकीले होते हैं।

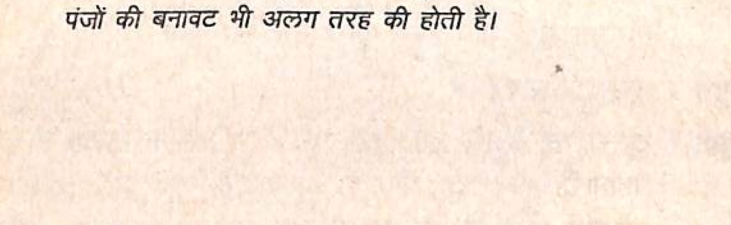

पेड़ पर रहने वाला चूहा। इसकी पूंछ लंबी होती है और पंजों की बनावट भी अलग तरह की होती है।

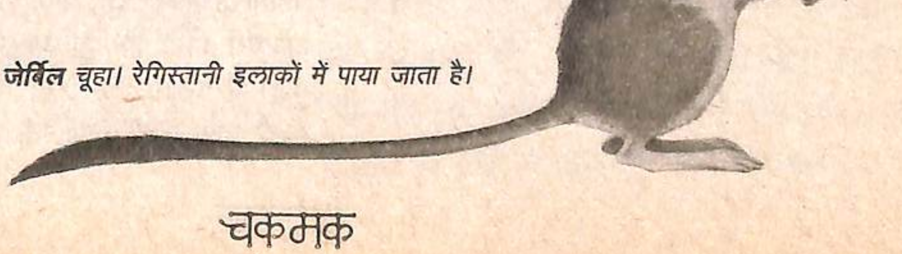

जेर्बिल चूहा। रेगिस्तानी इलाकों में पाया जाता है।

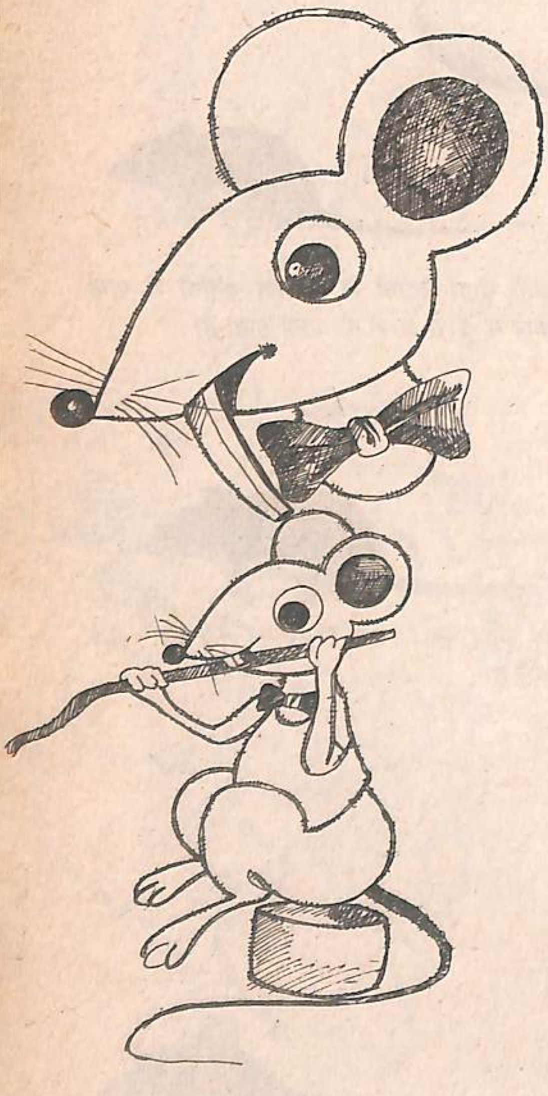

चूहा : भई असली बात यह है कि यह सब हमें अपने दांतों की वजह से करना पड़ता है।

गुनगुन : दांतों की वजह से। वो भला क्यों?

चूहा : देखो हमारे दांत मज़बूत तो बहुत हैं लेकिन वे तेज़ी से बढ़ते रहते हैं। उनका बढ़ना रोकने के लिए हमें उन्हें घिसते रहना ज़रूरी होता है।

गुनगुन : अच्छा तो इसलिए आप हर वस्तु को काटते-छांटते रहते हैं।

चूहा : जी हां, इसीलिए हम अपने बिल भी दांतों से खोदते हैं। लकड़ी को काटते हैं। इतना ही नहीं जस्ते की मोटी चादरों, शीशा और सीमेंट से बने पाइपों को भी कुतर डालते हैं।

मोलू : और अगर ऐसा नहीं करें तो?

चूहा : तो एक साल में ही हमारे दांत 13 सें.मी. तक बढ़ जाएंगे और हमारा जीना मुहाल हो जाएगा। जन्म के एक सप्ताह बाद ही हमारे दांत निकल आते हैं।

गुनगुन : हमने यह सुना है कि अंतर्राष्ट्रीय संस्था यूनेस्को ने आपको मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन घोषित किया है? आख़िर क्यों? शक्ल से तो आप बड़े ही सीधे लगते हैं।

चूहा : भई बात यह है कि मनुष्य हमसे बहुत परेशान हैं। परेशानी के दो कारण हैं।

मोलू : कौन-कौन से?

चूहा : पहला तो यह कि हमारी रहन-सहन की आदतों के कारण हमसे काफी मात्रा में खाद्यान्न नष्ट हो जाता है। जितना हम खाते हैं उससे दस गुना तो हमारे मल-मूत्र के कारण बेकार हो जाता है।

गुनगुन : ऐसा कितना अनाज बेकार हो जाता है?

चूहा : एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष कुल उपलब्ध खाद्यान्न का लगभग 5% भाग हमारे द्वारा नष्ट हो जाता है।

गुनगुन : दूसरा कारण?

चूहा : दूसरा यह है कि हम कुछ ऐसी बीमारियों के वाहक हैं जो महामारी की तरह फैलती हैं। शायद तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि दुनिया में अब तक लड़े गए दो विश्व युद्धों में जितने लोग मारे गए थे, उससे कहीं अधिक लोग हमारे द्वारा फैली बीमारियों से मरे हैं।

सामान्य चूहों के अलावा कुछ ऐसे चूहे भी हैं जो अपनी कुछ विशेषताओं के कारण जाने जाते हैं।

डोरमाऊस

डोरमाऊस, गिलहरी और चूहे के बीच का जीव है। इसीलिए इसमें गिलहरी तथा चूहों के मिले-जुले गुण मिलते हैं। गोल कान और छोटे पांव वाला यह चूहा, यूरोप तथा पश्चिमी एशिया में पाया जाता है। यह झाड़ियों, बगीचों तथा पहाड़ी जंगलों में निवास करता है।

ग्रासहॉपर माउस

चूहों को आमतौर पर नुकसान पहुंचाने वाला ही समझा जाता है। लेकिन ग्रासहॉपर माउस एक ऐसा चूहा है जो खेतों में पाए जाने वाले टिड्डों को खाकर फसल को नुकसान से बचाता है।

टैब-रैट

टैबरैट के नाम से मशहूर यह जीव अफ्रीका में पाया जाता है और पानी में रहता है। इसके पैर पतवार की शक्ल के होते हैं। इनकी सहायता से यह पानी में आसानी से तैर सकता है। लेकिन यह चल नहीं सकता।

मोलू : कौन-सी बीमारियां?

चूहा : जैसे प्लेग। कुछ और बीमारियों को फैलाने में भी हमारा हाथ माना जाता है।

गुनगुन : तो फिर!

चूहा : फिर क्या? तुम लोग यानी मानव हमारे पीछे हाथ धोकर पड़ा है। हमसे बचने की तरह-तरह की तरकीबें खोज ली हैं। हमें पकड़ने के लिए पिंजरा तो तुम्हारे घर में भी है। बाज़ार में तमाम चूहामार दवाएं मिलती हैं।

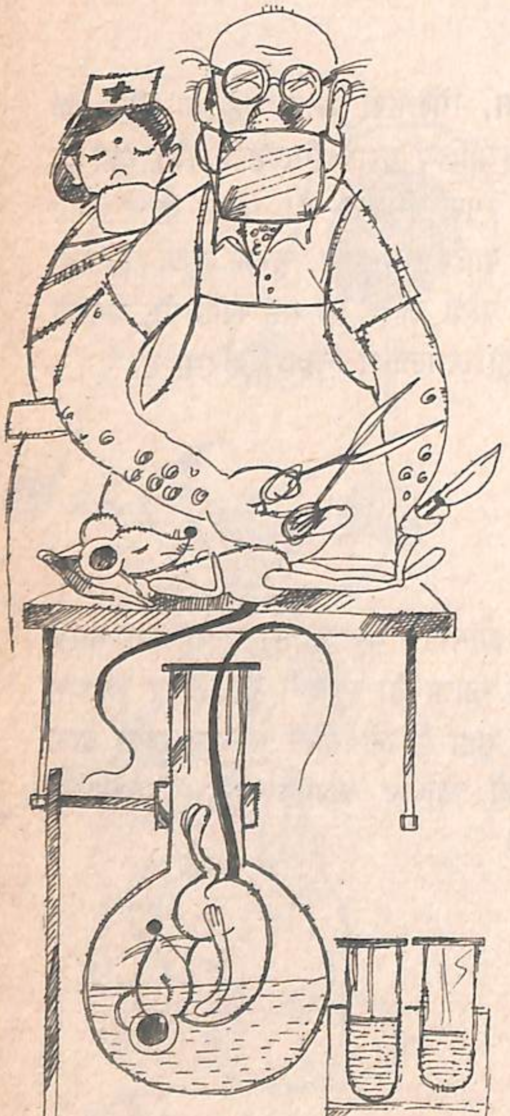

मोलू : लेकिन इसके बाद भी आपकी संख्या में कोई कमी नहीं आती।

चूहा : ठीक कहा तुमने। कुछ देशों में तो हमारी संख्या इतनी अधिक है कि वहां की सरकारों ने कुछ अजीब से नियम बनाए हैं।

गुनगुन : कैसे नियम?

चूहा : जैसे इंडोनेशिया में स्कूल के हर छात्र को तीन चूहे मारकर लाना अनिवार्य है। अगर वह चूहे नहीं लाता है तो उसे उस दिन स्कूल में हाजिरी नहीं मिलती है।

मोलू : अरे वाह।

चूहा : इसी तरह बंगलादेश में एक चूहा मारकर लाने पर पांच टका (बंगला देश की मुद्रा) दिया जाता है। इसके अतिरिक्त साल भर में एक निश्चित संख्या में चूहे मारकर लाने पर भी ईनाम दिया जाता है।

गुनगुन : यदि ऐसी योजनाएं हर देश में हों तब तो आपका सफ़ाया ही हो जाएगा।

चूहा : जी नहीं। वैज्ञानिकों का ऐसा मानना है कि प्राकृतिक रूप से या आणविक विध्वंस के बाद जब मानव जाति भी नष्ट हो जाएगी, तब भी चूहे नहीं मरेंगे।

मोलू : पर वैज्ञानिकों को यह कैसे पता चला?

चूहा : अब लो, दिन-रात तो हमारे ऊपर दुनिया भर की प्रयोगशालाओं में प्रयोग होते रहते हैं। नींद हराम कर रखी है हमारी, इन वैज्ञानिकों ने।

अभी इंटरव्यू पूरा भी नहीं हुआ था कि तभी एक मोटा चूहा मोलू-गुनगुन के ऊपर से रेस लगाता निकल गया। दोनों हड़बड़ाकर उठ बैठे और सपना टूट गया। दोनों सपने के बारे में सोचकर हंसने लगे। उन्हें लगा सपना थोड़ी देर और रहता तो दो-चार सवाल और पूछ लेते।

(श्री सतीश परसाई, सहायक प्राध्यापक, कृषि महाविद्यालय, खंडवा द्वारा भेजे गए लेख पर आधारित।)

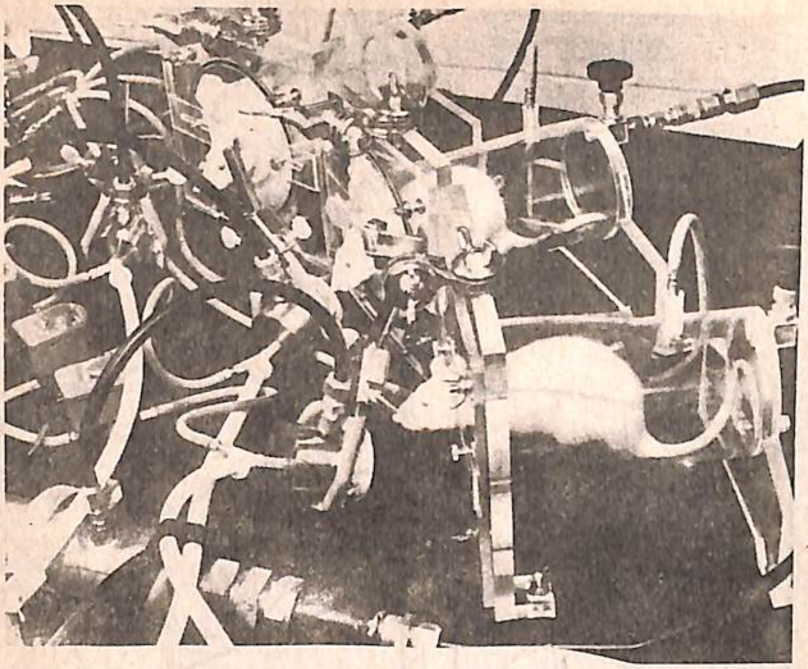

काले-भूरे चूहों के अलावा सफ़ेद चूहे भी होते हैं। पर वे दुनिया में कुछ ही जगहों पर पाए जाते हैं। संभव है तुमने किसी चिड़ियाघर में देखे हों।

मानव विभिन्न चीज़ों का असर परखने के लिये जिन जानवरों पर प्रयोग करता है, उनमें चूहे तथा मेंढक भी होते हैं। यह चित्र एक प्रयोगशाला का है। प्रयोग करके यह देखा जा रहा है कि प्रदूषित वायु का सफ़ेद चूहों के स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ता है।

पहचाना तुमने, कौन हैं ये दोनों! हां, बिलकुल ठीक, एक मेंढक और एक चूहा। लगता है दोनों आपस में बात कर रहे हैं क्या बात कर रहे हैं? बूझो तो! जो तुम बूझो, वह अधिक से अधिक पचास शब्दों में लिखकर हमें भेज दो। चुनी हुई रचनाएं हम चकमक में प्रकाशित करेंगे।

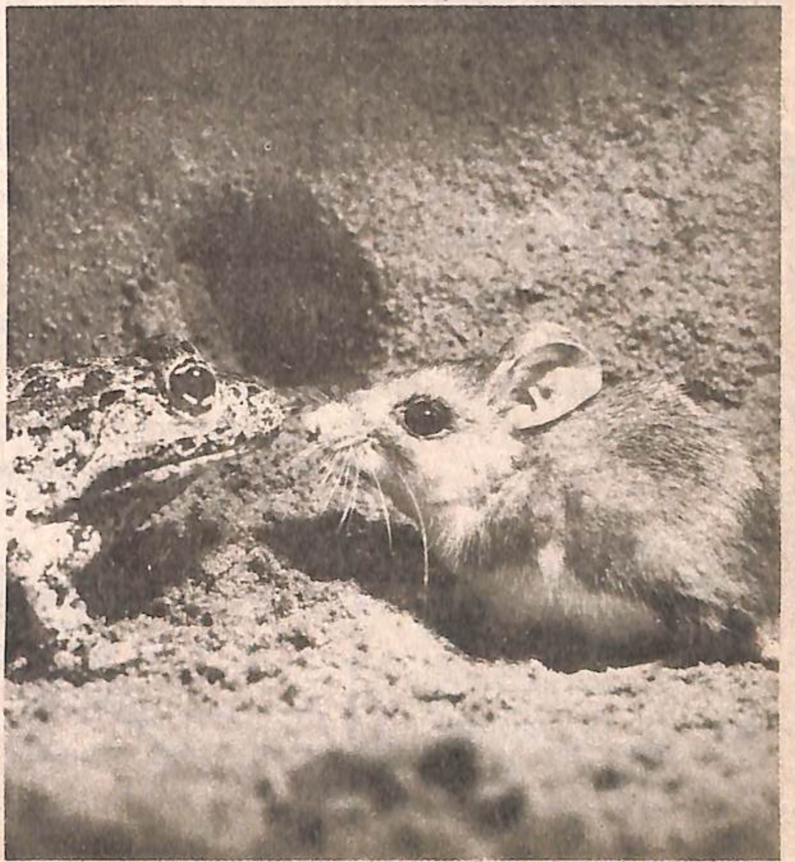

[इस लेख में आए चूहों के फोटो द बुक ऑफ़ इंडियन एनीमल; एबाउट एनीमलस् (चाइल्ड क्राफ्ट्स); स्माल मैमलूस तथा सीक्रेट वर्ल्ड ऑफ़ एनीमलूस (नेशनल ज्योग्राफ़िक सोसायटी) से साभार।]

तितली

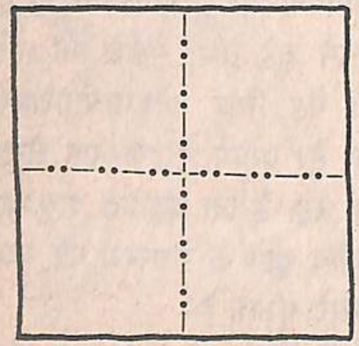

1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। उसे रुमाल की तरह चार तहों में मोड़कर, मोड़ पक्के कर लो।

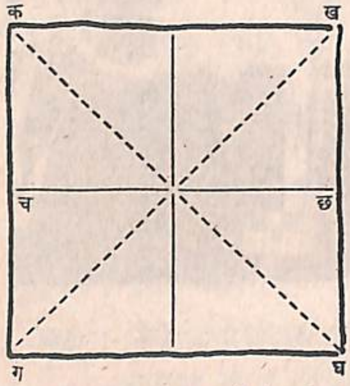

2. अब काग़ज़ पर कर्ण रेखाएं प्राप्त कर लो। तथा उसे नामांकित करो।

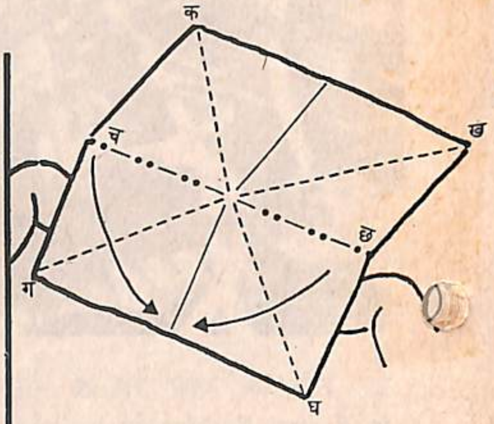

3. अब **च** तथा **छ** सिरों को **ग** और **घ** से काग़ज़ के केंद्र की तरफ जाने वाली कर्ण रेखाओं पर मोड़ते हुए तीर द्वारा बताए बिंदू पर लाने की कोशिश करो।

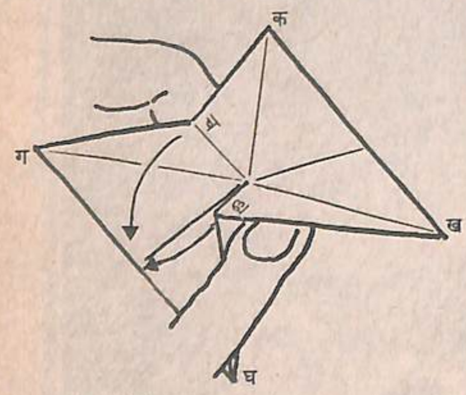

4. इस तरह।

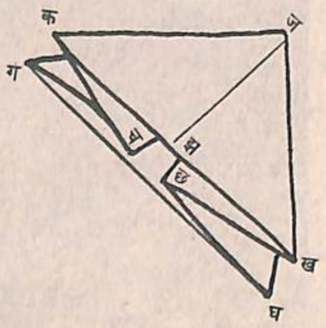

5. तुम्हें चार तहवाली आकृति मिलेगी। इस आकृति को पानी आधार कहते हैं।

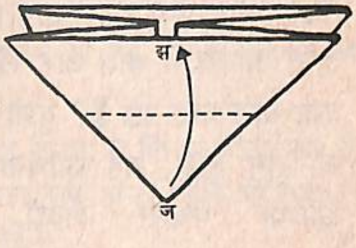

6. आकृति को उलट लो। अब **ज** सिरे को खाई मोड़ बनाते हुये **झ** पर ले आओ।

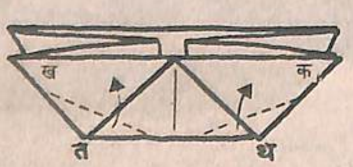

7. अब निचले सिरों यानी **त-घ** को टूटी हुई रेखाओं पर से ऊपर की तरफ मोड़ो।

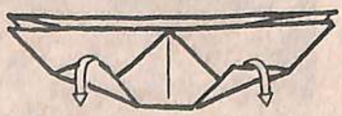

8. मोड़ों को पक्का करने के बाद खोल लो।

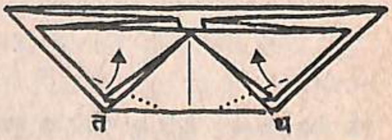

9. इस आकृति में चार सतह हैं। अंदर वाली दो सतहों को दुबारा ऊपर की तरफ मोड़ दो।

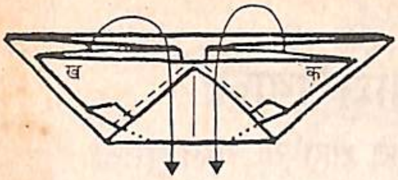

10. अब **ख-क** सिरों को टूटी हुई रेखाओं पर खाई मोड़ बनाते हुये नीचे की तरफ लाओ।

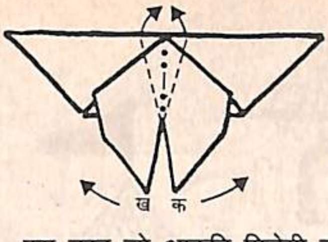

11. इस तरह जो आकृति मिलेगी उसे बीच से मोड़कर दोहरा कर लो।

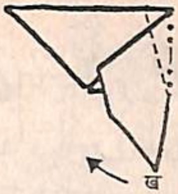

12. अब टूटी हुई पंक्ति द्वारा दिखाई गई रेखा पर से खाई मोड़ बनाते हुए शेष भांग को पलट दो। मोड़ को पक्का कर लो।

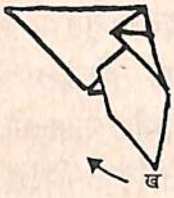

13. यही प्रक्रिया दूसरे हिस्से के साथ भी दोहराओ।

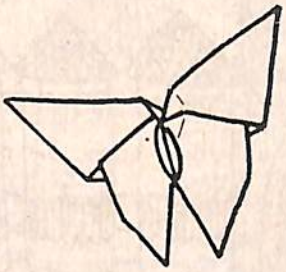

14. ऐसा करने पर तुम्हें बीचों बीच एक Vआकार का पहाड़ी मोड़ मिलेगा। बस बन गई तितली!

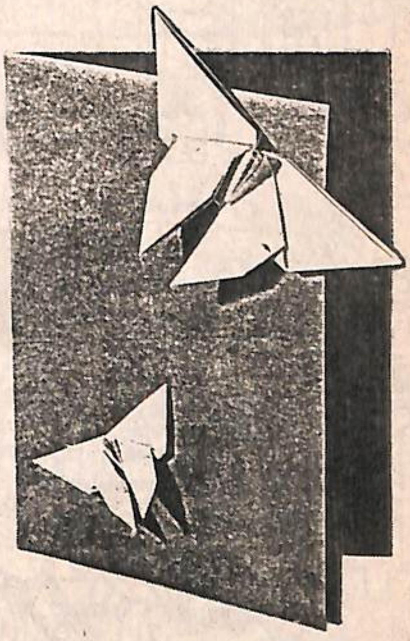

माथापच्ची हल : अप्रैल 92 अंक के

1. 24 सेंटीमीटर।
2. यहां सबसे अच्छा हल दिया जा रहा है।

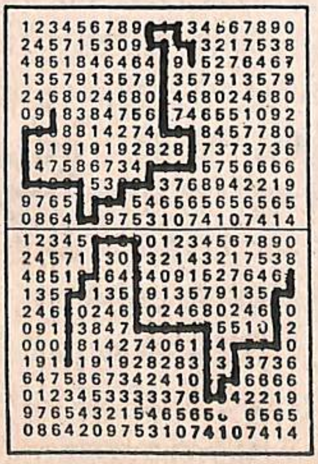

3. ग्यारह त्रिभुज

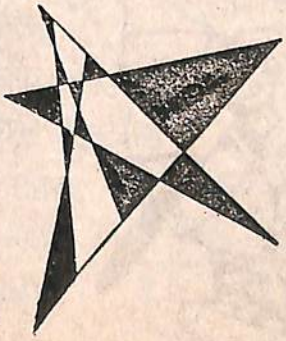

6. पांच बजने में पांच मिनट की देर।

सोचकर जवाब दो के हल : **1.** कील वहीं रहेगी। **2.** बकरी कहीं भी जा सकती है। क्योंकि रस्सी पेड़ में कहीं नहीं बंधी है। **3.** पानी नहीं गिर रहा है। **4.** गंजू के थैले ख़ाली हैं। **5.** पांच ही।

वर्ग पहेली 12 का हल

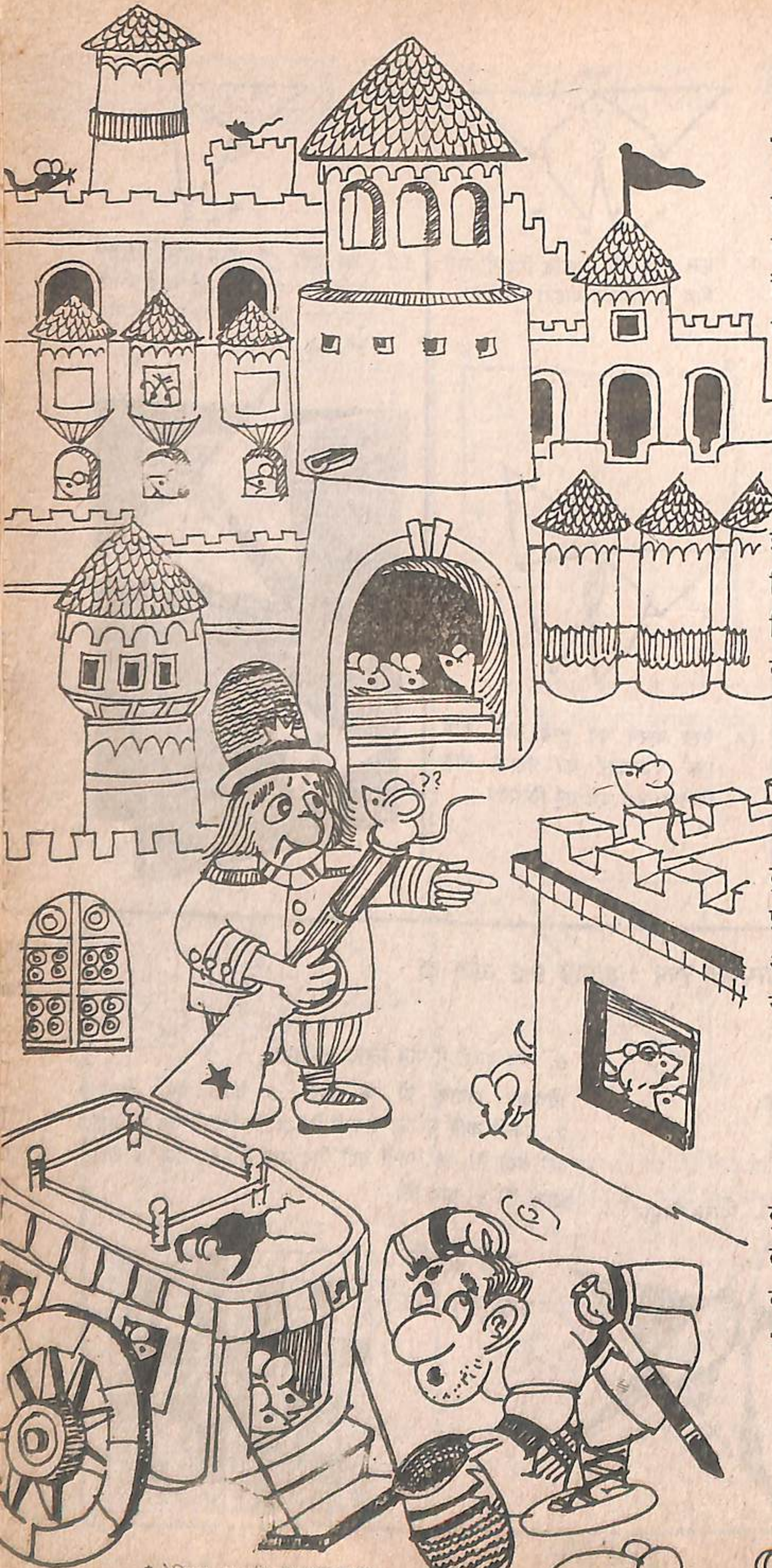

बांसुरीवाला

बात सात सौ साल पुरानी
सुनो ध्यान से प्यारे
हैम्लिन* नामक एक शहर था
वीज़र नदी किनारे।

यूं तो शहर बहुत सुंदर था
हैम्लिन जिसका नाम
मगर वहां के लोगों का
हो गया था चैन हराम।

इतने चूहे, इतने चूहे
गिनती हो गई मुश्किल
जिधर भी देखो, जहां भी देखो
करते दिखते किल-बिल।

बाहर चूहे, घर में चूहे
दरवाज़े और दर में चूहे
खिड़की और आलों में चूहे
थाली और प्यालों में चूहे।

ट्रंक में और संदूक में चूहे
फ़ौजी की बंदूक में चूहे
अफ़सर की गाड़ी में चूहे
नौकर की दाढ़ी में चूहे।

पूरब–पच्छिम, उत्तर–दक्खिन
जिधर भी देखो चूहे
ऊपर–नीचे, आगे–पीछे
जिधर भी देखो चूहे।

दुबले चूहे, मोटे चूहे
लंबे चूहे, छोटे चूहे
काले चूहे, गोरे चूहे
भूखे और चटोरे चूहे।

चूहे भी वो ऐसे चूहे
बिल्ली को खा जाएं
कुत्ते उन से डर के भागें
चीलें जान बचाएं।

* हेम्लिन, जर्मनी का एक शहर

चूहों से घबराकर
राजा ने ये किया ऐलान
जो उनसे पीछा छुटवाये
पाए ढेर इनाम।

सुनकर ये ऐलान वहां पर
पहुंचा एक मदारी
मस्त क़लंदर नाम था उसका
मुंह पर लंबी दाढ़ी।

झोले से बंसी निकालकर
मीठी तान बजाई
जिसको सुनकर चूहा सेना
दौड़ी–दौड़ी आई।

कोनों खुदरों से निकले
और निकले महल अटारी से
नाले नाली से निकले
और निकले बक्स पिटारी से।

घर की चौखट को फलांग कर
आए ढेरों चूहे
छत के ऊपर से छलांग कर
आये ढेरों चूहे।

लाखों चूहों का जलूस
चल पड़ा मदारी के पीछे
जैसे कोई डोरी उनको
लिए जा रही हो खींचे।

आगे-आगे चला मदारी
पीछे चूहे सारे
चलते–चलते वो जा पहुंचे
वीज़र नदी किनारे।

वहां पहुंच कर भी ना ठहरा
वो छः फुटा मदारी
उतर गया दरिया के अंदर
पीछे पलटन सारी।

ले गया मदारी सब चूहों को
वीज़र नदी के अंदर
एक भी ज़िंदा नहीं बचा
सब डूबे नदी के अंदर।

चूहों को यूं मार मदारी
राजा के घर आया
अपने इनाम का वादा उसको
फ़ौरन याद दिलाया।

राजा बोला "क्या कहते हो
मिस्टर मस्त क़लंदर
चूहे तो ख़ुद ही जा डूबे
वीज़र नदी के अंदर।

कौन–सा तुमने कद्दू में
मारा है ऐसा तीर
जिसके कारण पुरस्कार दें
तुमको मस्त फ़क़ीर?"

देख के ऐसी मक्कारी
वो रह गया हक्का-बक्का
उसके भोले मन को इससे
लगा ज़ोर का धक्का।

गुस्से से हो आगबबूला
महल से बाहर आया
थैले से बंसी निकाल कर
सुंदर राग बजाया।

सुनकर उसकी बंसी की धुन
बच्चे दौड़े आए
कुटियाओं, बंगलों, महलों से
दौड़े-दौड़े आए.

लंबे बच्चे, छोटे बच्चे
दुबले बच्चे, मोटे बच्चे
दूर के बच्चे, पास के बच्चे
साधारण और ख़ास से बच्चे।

हंसते बच्चे, रोते बच्चे
जाग रहे और सोते बच्चे
गांव के बच्चे, नगर के बच्चे
गली, मुहल्ले, डगर के बच्चे।

लाखों बच्चों का जमघट
चल पड़ा मदारी के पीछे
जैसे कोई जादू उनको
लिए जा रहा हो खींचे।

ले गया दूर शहर से उनको
वो छः फुटा मदारी
नहीं रोक पाई बच्चों को
नगर की जनता सारी।

बिगड़ गई हैम्लिन की जनता
पहुंची राजा के द्वारे
बोली: ''तेरी बेईमानी से
बच्चे गए हमारे।

नहीं चाहिए ऐसा राजा
करता जो मनमानी
वादा करके झुठला देता
ये कैसी बेईमानी।''

राजा से गद्दी छीनी
दे डाला देशनिकाला
और हैम्लिन का राज पाट
ख़ुद, जनता ने ही संभाला।

नए राज ने मस्त मदारी
को फ़ौरन बुलवाया
माफ़ी मांगी और मुंह मांगा
पुरस्कार दिलवाया।

सारे बच्चे वापस पहुंचे
अपने-अपने घर पे
पूरे शहर में खुशी मनी
और दीए जले दर-दर पे।

❑ **सफ़दर हाशमी**
सभी चित्र : विवेक
(सहमत के सौजन्य से)

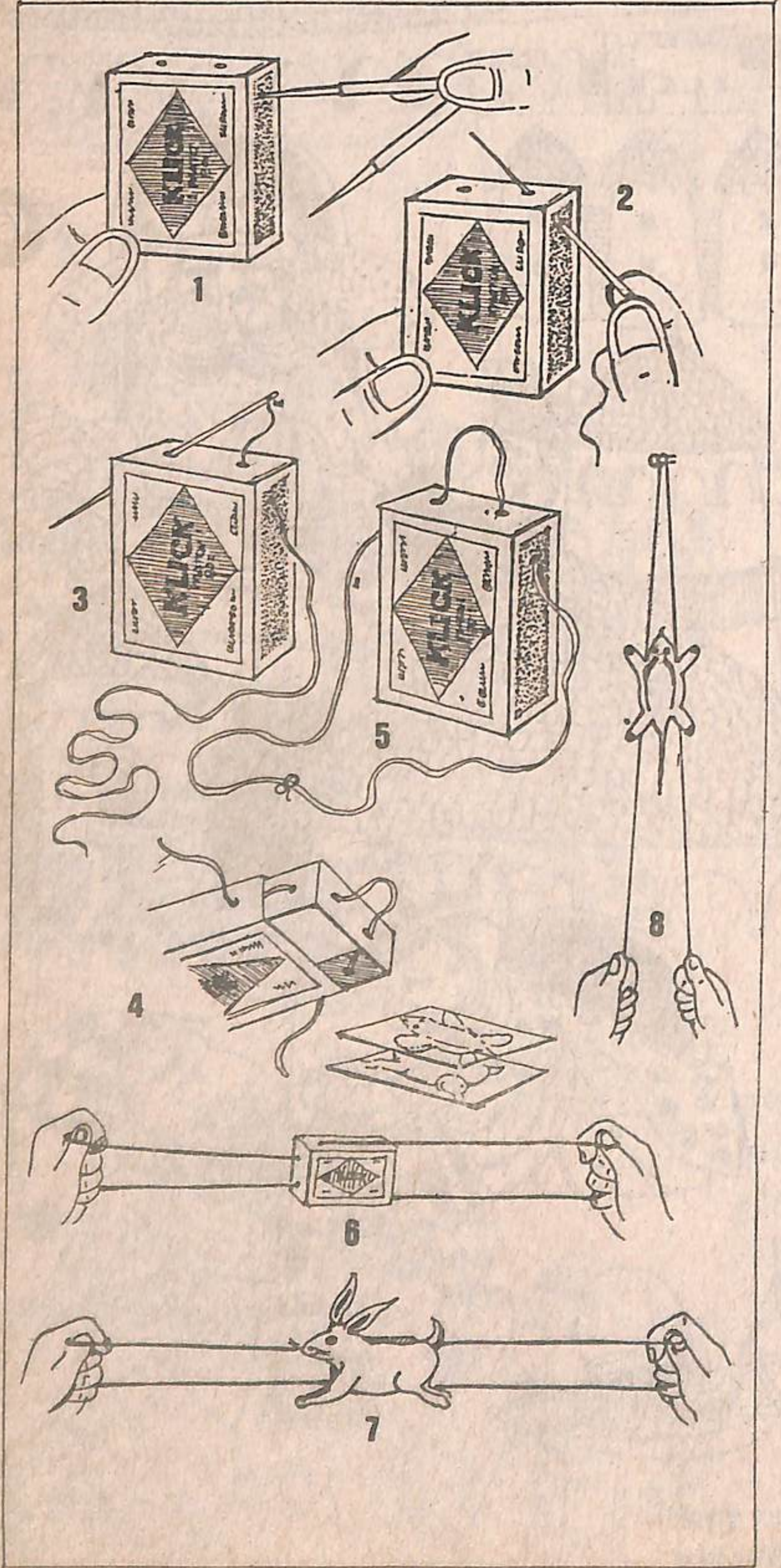

माचिस एक, खेल दो

पहले ख़ाली माचिस की डिबिया से मज़ेदार खिलौना बनाओ।

डिबिया की मसाले वाली दोनों सतहों पर किसी एक सिरे पर 1.5 से.मी. जगह छोड़कर एक-एक छेद कर लो। इसी सिरे पर दराज में भी बाहर की सतह पर भी दो छेद कर लो (**चित्र-1**)।

अब लगभग डेढ़ मीटर लंबा मोटा डोरा लेकर इन छेदों में से डालो (**चित्र- 2, 3, 4, 5 की तरह**) और दोनों सिरों को बांध दो। खिलौना तैयार है।

अब दोनों हाथों से डोर को पकड़ो (**चित्र-6**) और बाएं हाथ को फुर्ती से आगे-पीछे चलाओ। डिबिया डोरे पर बाईं ओर खिसकेगी। जब यह बाएं सिरे पर पहुंच जाए तो इसे हाथ से खिसकाकर दाएं सिरे पर लाना होगा।

चाहो तो डिबिया पर खरगोश या अन्य किसी जानवर का चित्र बनाकर चिपका दो (**चित्र-7**)।

एक छोटा-सा बदलाव करके इसे और मज़ेदार बना सकते हो। खिलौने के ऊपरी सिरे को एक कील से लटका दो। दूसरे सिरे की डोरियों को खोलकर अलग-अलग कर लो। अब दाहिनी और बाईं डोरियों को बारी-बारी से खीचों। ऐसा करने से तुम्हारा खिलौना ऊपर की तरफ चढ़ेगा (**चित्र-8**)।

चढ़ने वाला जोकर

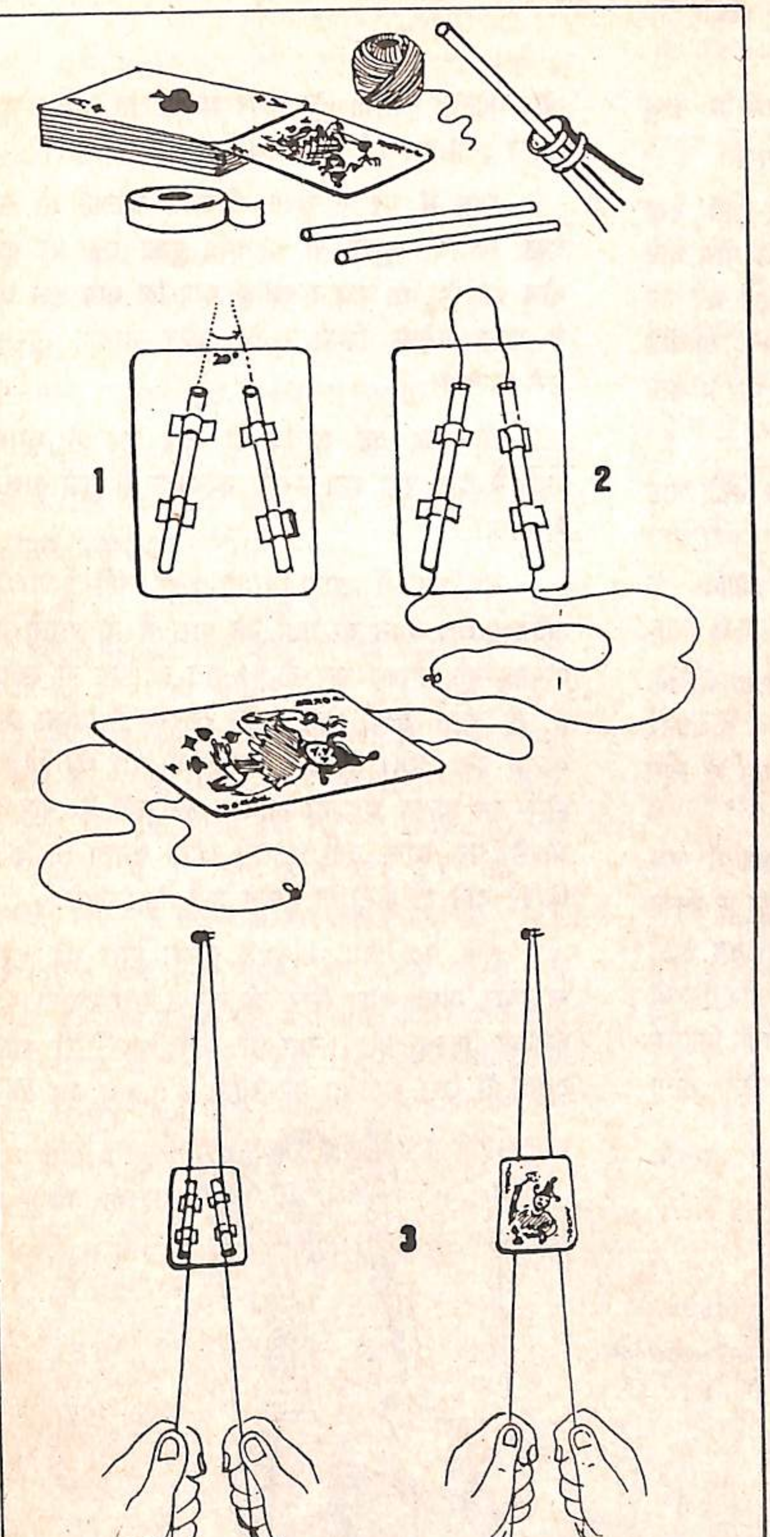

सिद्धांत रूप में यह भी माचिस वाले खिलौने की तरह ही चलता है। बस थोड़ा-सा फ़र्क है।

ताश की गड्डी से एक जोकर लो। इसके पीछे सोडा-लेमन पीने वाली प्लास्टिक की स्ट्रा (नली) के 6 से.मी. लंबे दो टुकड़े काटकर **चित्र 1** में दिखाए अनुसार चिपका दो। उनके सबसे पास वाले सिरों के बीच करीब 20 अंश का कोण बनना चाहिए।

अब लगभग दो मीटर, मोटा डोरा लेकर दोनों स्ट्रा के टुकड़ों में से डालकर सिरों पर गांठ लगा दो (**चित्र-2**)।

डोरे के ऊपरी सिरे को एक कील से लटका दो (**चित्र-3**)। अब डोर के निचले हिस्सों को दोनों हाथों से पकड़कर बारी-बारी से खींचों। जोकर ऊपर की तरफ चढ़ेगा।

जोकर ऊपर की तरफ चढ़े इसके लिये ज़रूरी यह है कि डोरी में एक न्यूनतम तनाव हो। स्ट्रा के दोनों टुकड़ों के बीच के कोण को कम-ज़्यादा करके देखो कि उससे डोरी के तनाव पर क्या असर पड़ता है।

जोकर की जगह तुम कोई अन्य चित्र भी चिपका सकते हो। माचिस के खिलौने और इसमें एक फ़र्क है। इसे ऊपर चढ़ जाने पर हाथ से पकड़कर वापस नहीं लाना पड़ता है, डोरे का तनाव थोड़ा-सा कम करने पर यह ख़ुद ही नीचे आ जाता है।

❑ **अरविंद गुप्ता**

चित्र : अविनाश देशपांडे

चूहा और मैं

यह कहानी स्टीन बेक अंग्रेज़ी लेखक के लघु उपन्यास 'ऑफ़ मेन एण्ड माउस' से अलग है।

चाहता तो लेख का शीर्षक 'मैं और चूहा' रख सकता था। पर मेरा अहंकार इस चूहे ने नीचे कर दिया। जो मैं नहीं कर सकता, वह यह मेरे घर का चूहा कर लेता है। जो इस देश का सामान्य आदमी नहीं कर पाता, वह इस चूहे ने मेरे साथ करके बता दिया।

इस घर में एक मोटा चूहा है। जब छोटे भाई की पत्नी थी, तब घर में खाना बनता था। इस बीच पारिवारिक दुर्घटनाओं-बहनोई की मृत्यु आदि- के कारण हम लोग बाहर रहे।

इस चूहे ने अपना अधिकार मान लिया था कि मुझे खाने को इसी घर में मिलेगा। ऐसा अधिकार आदमी भी अभी तक नहीं मान पाया। चूहे ने मान लिया है।

लगभग पैंतालिस दिन घर बंद रहा। मैं जब अकेला लौटा, घर खोला, तो देखा कि चूहे ने क़ाफी 'क्रॉकरी' फ़र्श पर गिराकर फोड़ डाली है। बह खाने की तलाश में भड़भड़ाता होगा। क्रॉकरी और डिब्बों में खाना तलाशता होगा। उसे खाना नहीं मिलता होगा, तो वह पड़ोस में कहीं कुछ खा लेता होगा और जीवित रहता होगा। पर घर उसने नहीं छोड़ा। उसने इसी घर को अपना घर मान लिया था।

जब मैं घर में घुसा, बिजली जलाई तो मैंने देखा कि वह खुशी से चहकता हुआ यहां से वहां दौड़ रहा है। वह शायद समझ गया कि अब इस घर में खाना बनेगा, डिब्बे खुलेंगे और उसकी खुराक उसे मिलेगी।

दिन-भर वह आनंद से सारे घर में घूमता रहा। मैं देख रहा था। उसके उल्लास से मुझे अच्छा ही लगा।

पर घर में खाना बनना शुरू नहीं हुआ। मैं अकेला था। बहन के यहां जो पास में ही रहती है, दोपहर को भोजन कर लेता। रात को देर से खाता हूं, तो बहन डब्बा भेज देती। खाकर मैं डब्बा बंद करके रख देता। चूहाराम निराश हो रहे थे। सोचते होंगे- यह कैसा घर है। आदमी आ गया है। रोशनी भी है। पर खाना नहीं बनता। खाना बनता तो कुछ बिखरे दाने या रोटी के टुकड़े उसे मिल जाते।

मुझे एक नया अनुभव हुआ। रात को चूहा बार-बार आता और सिर की तरफ मच्छरदानी पर चढ़कर कुलबुलाता। रात में कई बार मेरी नींद टूटती मैं उसे भगाता। पर थोड़ी देर बाद वह फिर

आ जाता और सिर के पास हलचल करने लगता।

वह भूखा था। मगर उसे सिर और पांव की समझ कैसे आई? वह मेरे पांवों की तरफ गड़बड़ नहीं करता था। सीधे सिर की तरफ आता और हलचल करने लगता। एक दिन वह मच्छरदानी में घुस गया।

मैं बड़ा परेशान। क्या करूं? इसे मारूं और यह किसी आलमारी के नीचे मर गया, तो सड़ेगा और सारा घर दुर्गन्ध से भर जाएगा। फिर भारी आलमारी हटाकर इसे निकालना पड़ेगा।

चूहा दिन-भर भड़भड़ाता और रात को मुझे तंग करता। मुझे नींद आती, मगर चूहाराम मेरे सिर के पास भड़भड़ाने लगते।

आख़िर एक दिन मुझे समझ में आया कि चूहे को खाना चाहिए। उसने इस घर को अपना घर मान लिया है। वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। वह रात को मेरे सिरहाने आकर शायद यह कहता है-क्यों बे, तू आ गया है। भर-पेट खा रहा है, मगर मैं भूखा मर रहा हूं। मैं इस घर का सदस्य हूं। मेरा भी हक है। मैं तेरी नींद हराम कर दूंगा। तब मैंने उसकी मांग पूरी करने की तरकीब निकाली।

रात को मैंने भोजन का डब्बा खोला, तो पापड़ के कुछ टुकड़े यहां-वहां डाल दिए। चूहा कहीं से निकला और एक टुकड़ा उठाकर अलमारी के नीचे बैठकर खाने लगा। भोजन पूरा करने के बाद मैंने रोटी के कुछ टुकड़े फ़र्श पर बिखरा दिए। सुबह देखा कि वह सब खा गया है।

एक दिन बहन ने चावल के पापड़ भेजे। मैंने तीन-चार टुकड़े फर्श पर डाल दिए। चूहा आया सूंघा और लौट गया। उसे चावल के पापड़ पसंद नहीं। मैं चूहे की पसंद से चमत्कृत रह गया। मैंने रोटी के कुछ टुकड़े डाल दिए। वह एक के बाद एक टुकड़ा लेकर जाने लगा।

अब यह रोज़मर्रा का काम हो गया। मैं डब्बा खोलता, तो चूहा निकलकर देखने लगता। मैं एक-दो टुकड़े डाल देता। वह उठाकर ले जाता। पर इतने से उसकी भूख शांत नहीं होती थी। मैं भोजन करके रोटी के टुकड़े फर्श पर डाल देता। वह रात को उन्हें खा लेता और सो जाता।

इधर मैं भी चैन की नींद सोता। चूहा मेरे सिर के पास गड़बड़ नहीं करता।

फिर वह कहीं से अपने एक भाई को ले आया। कहा होगा- 'चल रे, मेरे साथ उस घर में। मैंने उस रोटीवाले को तंग करके, डरा के, खाना निकलवा लिया है। चल दोनों खाएंगे। उसका बाप हमें खाने को देगा। वरना हम उसकी नींद हराम कर देंगे। हमारा हक है।'

अब दोनों चूहाराम मज़े में खा रहे हैं।

मगर मैं सोचता हूं- आदमी क्या चूहे से भी बदतर हो गया है? चूहा तो अपनी रोटी के हक के लिए मेरे सिर पर चढ़ जाता है, मेरी नींद हराम कर देता है?

इस देश का आदमी कब चूहे की तरह आचरण करेगा?

❑ **हरिशंकर परसाई**

(परसाई रचनावली से साभार)

सभी चित्र : जया

माथापच्ची

(1)

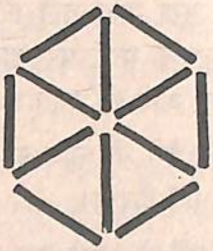

यह आकृति तीलियों से बनी है और इसमें छह त्रिभुज हैं। कम से कम कितनी और तीलियां इसमें जोड़नी पड़ेंगी या हटानी पड़ेंगी कि आकृति में छह वर्ग नज़र आने लगे?

(2)

1234	1234	1234
1234	1234	1234
1234	1234	1234

इस जाली के हर खाने में 1234 संख्या लिखी है। इस जाली की विशेषता यह है कि किसी भी कालम को ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं या कोने से कोने जोड़ने पर योगफल बराबर आता है। अब तुम 1, 2, 3, 4 अंकों का उपयोग कर नौ ऐसी विभिन्न संख्याएं बनाओ जिन्हें इन खानों में रखा जा सके। लेकिन रखना इसी तरह है कि किसी भी कालम को ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं या कोने से कोने जोड़ने पर योगफल बराबर आए। हां यह ज़रूरी नहीं है कि हर संख्या में चारों अंक (1, 2, 3, 4) आएं। जैसे 2331 या 3321 या 1224 जैसी संख्याएं हो सकती हैं। लेकिन हां इन चार के अलावा अन्य कोई अंक नहीं होना चाहिए।

(3)

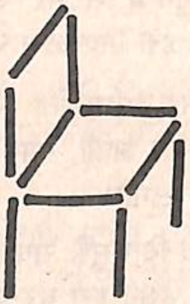

दस तीलियों से बनी इस कुर्सी का मुंह दाईं ओर है। कुर्सी का मुंह बाईं तरफ करने के लिए कम से कम कितनी तीलियों की जगह बदलनी पड़ेगी?

(4)

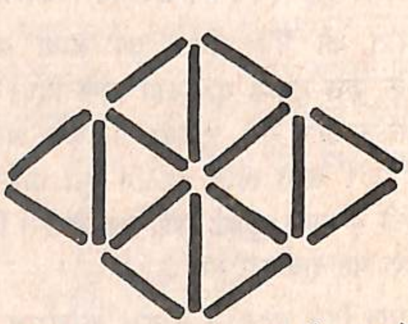

यहां तीलियों से जो आकृति बनी है, उसमें आठ बराबर आकार के त्रिभुज हैं। अब केवल चार तीलियों को इस तरह हटाओ की छह त्रिभुज कम हो जाएं।

(5)

कुसुम के पास लाल और नीले रंग के दो फीते थे। नीला फीता, लाल से दुगनी लंबाई का था। उसने दोनों फीतों से छः-छः इंच का टुकड़ा काट लिया। अब नीला फीता, लाल से लंबाई में तिगुना हो गया। फीतों की लंबाई क्या थी?

(6)

यदि अब से चालीस मिनट पहले 10 बजकर जितने मिनट हुए थे, उनके एक तिहाई मिनट एक बजने में अभी शेष हैं, तो बताओ अभी क्या बजा है?

(7)

चुन्नू जी को दो तरबूज ख़रीदने थे। पर वे चाहते थे कि दोनों तरबूजों का कुल वज़न 11 किलो हो। दुकानदार के पास पांच तरबूज थे। चुन्नू जी और दुकानदार ने मिलकर बहुत माथापच्ची की, लेकिन और कोई भी दो तरबूज ऐसे नहीं निकले, जिनका कुल वज़न 11 किलो हो। जो जोड़े बनाए गए उनका वज़न इस प्रकार आया- 6.5, 8, 9.5, 10, 10.5, 11.5 12, 13, 13.5 और 15.5 अब चुन्नू जी और दुकानदार को छोड़ो तुम यह बताओ की पांचों तरबूजे कितने-कितने वज़न के थे।

(8)

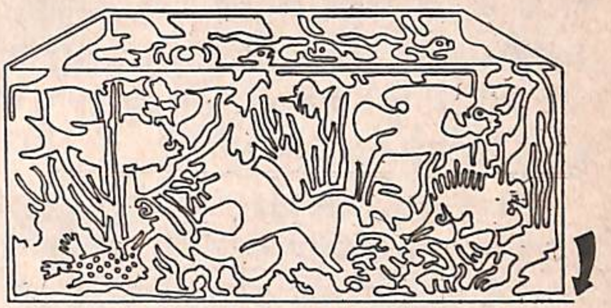

यह मछलीघर का चित्र है। इसकी विशेषता यह है कि पूरा चित्र एक ही रेखा से बना है। तीर से इस रेखा का एक सिरा दिखाया गया है- पर दूसरा सिरा कहां है? पता करो। और यह भी पता करो कि उस सिरे तक कैसे पहुंचोगे? रास्ते में कितनी मछलियां मिलेंगी यह भी बताना।

वर्ग पहेली-13

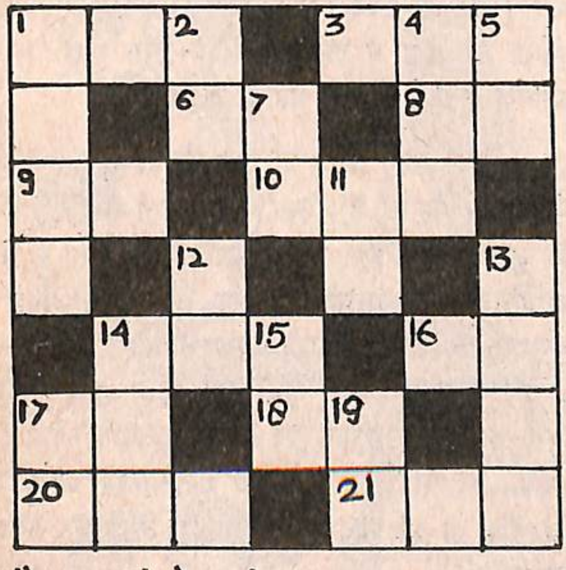

संकेत: बाएं से दाएं

1. आम-इमरती में भक्तिगीत (3)
3. प्रयोगशाला के बीकर में एक संत कवि (3)
6. इसे ठोकर मारो तो यह भी सिर पर चढ़ती है। (2)
8. कानून का एक नियम (2)
9. जो स्थिर न हो (2)
10. तरंग (3)
14. प्रेम (3)
16. शोक की भाषा में चमक कहां? (2)
17. कभी न आने वाला दिन (2)
18. चुनाव में हम क्या देते हैं? (2)
20. अलाय-बलाय की बात करने में भी योग्यता है। (3)
21. कस्बा (2)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. जिसका काम ही मीन-मेख निकलना हो (4)
2. किनारा (2)
4. तांबें एवं जस्ते के मेल से बनी धातु (3)
5. समाप्त (2)
7. जिसके बिना मोती, मानस, चून का उद्धार नहीं होता (2)
11. ज़ोर से हंसने का शब्द (2)
12. समूह (2)
13. रात (4)
14. ऐसी घटना जिसमें सब कुछ नष्ट हो जाता है (3)
15. इसे मृत्यु का देवता माना जाता है (3)
17. हुनर या विद्या (3)
19. कतरन में देह (2)

(शिवनारायण गौर, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद द्वारा भेजी गई वर्ग-पहेली पर आधारित)

अब वर्ग पहेली के सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को तीन माह तक उपहार में चकमक भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें।

क्यों.....क्यों.....20

मुनिया की मां बाज़ार से नया मटका ख़रीदकर लाई थी। मटका देखकर मुनिया खुश हो गई कि चलो अब ठंडा पानी पीने को मिलेगा। मुनिया ने मां से पूछा, 'मां नया मटका कब भरोगी।'

मां ने कहा, 'शाम-को। फिर अगले ही पल उन्हें कुछ ध्यान आया तो बोली, 'पर सुन उसका पानी अभी मत पीना। कल सुबह जब फिर से भरेंगे तब पीना।'

मुनिया ने हमेशा की तरह पूछा, 'क्यों?'

'इसलिए, कि नए मटके का पहला पानी पीने पर गला बैठ जाता है।' मां ने आशा के विपरीत इस बार जवाब दिया।

मुनिया ने फिर एक सवाल दाग दिया, 'क्यों?'

पर इस सवाल का जवाब मां से नहीं मिला मुनिया को। लेकिन मुनिया ने चुपके से नए मटके का एक गिलास पानी पी ही लिया। अब उसका गला बैठा या नहीं, हमें नहीं पता! **पर तुम क्या कहते हो? क्या सचमुच नए मटके का पानी पीने से गला बैठ जाता है? क्यों बैठ जाता है? कभी तुम्हारा गला भी बैठा है? इन सवालों के जवाब पता करो और हमें 15 जुलाई, 1992 तक लिखकर भेज दो।**

क्यों.....क्यों..15 : उत्तर

क्यों ....क्यों.......15 में हमने पूछा था कि मिर्गी आने पर जूता क्यों सुंघाया जाता है? जवाब में हमें पंद्रह पत्र प्राप्त हुए हैं।

सच बात क्या है यह जानने से पहले यह देखें की आख़िर मिर्गी में होता क्या है?

मिर्गी घातक तो नहीं है पर फिर भी वह एक भयावह रोग है। इसका रोगी रास्ते में चलते-चलते अचानक बेहोश होकर गिर पड़ता है। बेहोशी से रोगी का शरीर अकड़ जाता है मुंह से झाग निकलने लगता है। हाथ-पैर झटका मारते हैं और कभी-कभी रोगी की टट्टी-पेशाब भी निकल आती है। यह क्यों होता है या दौरे क्यों पड़ते हैं यह ठीक-ठीक बताना आज भी संभव नहीं है। हां, इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि मस्तिष्क में पैदा होने वाली साधारण विद्युत तरंगों के कंपन में गड़बड़ होने से ये दौरे पड़ते हैं। गड़बड़ी मस्तिष्क के किस हिस्से में होती है, यह भी अभी एक पहेली है। इलाज का भी यही हाल है। दवाओं के ज़रिए केवल दौरों की संख्या कम की जा सकती है।

ध्यान रहे यह ज़रूरी नहीं है कि हर पुरानी प्रथा, परंपरा या रीतिरिवाज़ दकियानूसी ही हो, उसके पीछे कोई तार्किक आधार भी हो सकता है। आधार एक या एक से अधिक भी हो सकते हैं। पर यह भी आवश्यक नहीं है कि हर परंपरा या प्रथा के पीछे आधार होगा ही।

अब जहां तक जूता सुंघाने का सवाल है तो उसमें एक ही तथ्य दिखाई देता है। मिर्गी में बेहोशी आती है। होश में लाने के लिये ऐसा कुछ करना ज़रूरी होता है जिससे बेहोशी टूट जाए।

पहले लोग चमड़े के जूते पहनते थे (आज भी कई लोग पहनते हैं)। ऐसा कहा जाता है कि चमड़े के जूतों में फंसे पैरों में जब पसीना निकलता है, तो अमोनिया गैस बनती है। यह गैस अपने विशेष गुणधर्म के कारण बेहोशी तोड़ सकती है। संभवतः इसीलिए लोग मिर्गी आने पर जूता सुंघाते हैं। कभी-कभी जूता सुंघाने पर बेहोशी टूट भी जाती है। लेकिन हर बार नहीं। इसलिये यदि किसी को मिर्गी का रोग हो तो डॉक्टर से सलाह लेना ही सबसे बेहतर है।

इन पाठकों ने जवाब भेजे-

राघव प्रसाद विद्यार्थी, बाजार राहो रोड, लुधियाना, **पंजाब**। बालकराम बरई, रामदासपुर मझौली, फैज़ाबाद, **उ.प्र.**। सत्येंद्र सिंह रघुवंशी, हरदा। शर्मीला दुबे, सुंदरसी, शाजापुर। रामकुमार धीवर, गतौरा, बिलासपुर। सत्येंद्र कुमार निराला, जशपुर नगर, रायगढ़। कुबेर शरण द्विवेदी, छपड़ौर, शहड़ोल। देवेंद्र कुमार माकोड़े, राय आमला, बैतूल (**सभी मध्यप्रदेश**)।

बिंदु
साहू
गोलू, तुम बहुत कमजोर हो गए हो, क्या बात है?
गुरुजी के डंडे खा खा कर मुझे कमजोर तो होना ही है।
डंडे की मार से शरीर की कोशिकाएं और ऊतक नष्ट हो जाते हैं। उनकी भरपाई न होने पर शरीर में कमजोरी आ जाती है।
तुम्हें प्रोटीन युक्त आहार लेना चाहिए।
प्रोटीन किन किन चीजों में होते हैं?
दाल, मांस, अंडे में काफी प्रोटीन होते हैं।
क्या सभी प्रकार के अंडों में प्रोटीन होते हैं?
हां।
गणित में गुरुजी के दिए अंडों में भी?
!!!
नहीं। यदि उनमें प्रोटीन होते तो तुम इतने कमजोर कभी न होते।

एक मज़ेदार खेल

मोमबत्तियों का झूला

तुमने शायद पार्क आदि में सी-सॉ झूला देखा ही होगा। आओ घर में ऐसा ही झूला मोमबत्ती से बनाते हैं।

इसे बनाने के लिए एक लंबी मोमबत्ती, एक लंबी मोटी सुई (या तार) तथा दो गिलास इकट्ठे करो।

अब सबसे पहले मोमबत्ती के दूसरे सिरे को भी ऐसा बना लो कि उसे जलाया जा सके। इसके लिए तुम्हें इस सिरे का थोड़ा मोम हटाना होगा ताकि बत्ती बाहर निकल आए।

अब मोमबत्ती का केंद्र यानी बीचों-बीच का बिंदु पता करो। इस बिंदु पर से एक मोटी सुई मोमबत्ती के आर-पार निकाल दो। मोमबत्ती को दो-चार बार सुई के चारों तरफ घुमा दो। जिससे मोमबत्ती का छेद थोड़ा बड़ा हो जाए।

अब सुई के सिरों को गिलासों पर टिका दो। चाहो तो मोमबत्ती के इस सी-सॉ पर गत्ते से दो बच्चों की आकृतियां बनाकर बिठा दो।

खेल शुरू करने के लिए मोमबत्ती के दोनों सिरों को जला दो। देखो क्या होता है?

❑ **मुकुल विनायक सप्रे, ग्वालियर**

आम

पत्ती

फूल

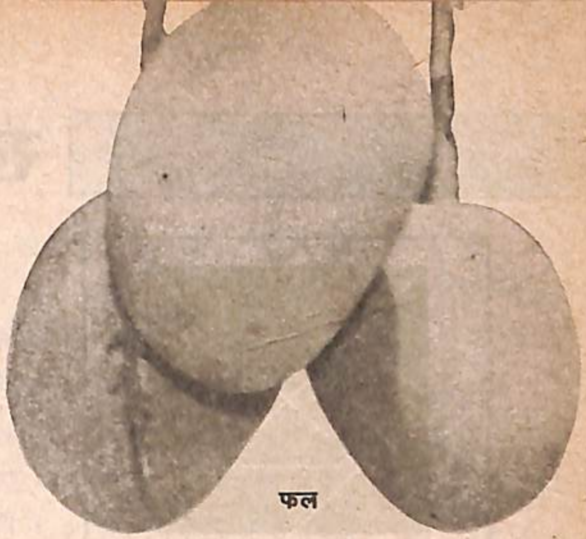
फल

आम तो इतना 'आम' है कि उसमें कुछ 'ख़ास' दिखता नहीं। लेकिन जिस फल को फलों का राजा कहा जाता हो, उसमें कुछ तो ख़ास बात होगी ही।

ख़ास बात यह है कि आम की सैकड़ों क़िस्में होती हैं, लेकिन सबका स्वाद अलग-अलग होता है।

हमारे देश में तो आम पिछले 4000 साल से उगाया जाता रहा है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी इसका उल्लेख मिलता है। यह माना जाता है कि भारत में इसका जन्म बंगाल की खाड़ी के आसपास के इलाके में हुआ। सबसे पहले आम कहां पैदा हुआ, इस पर इतिहासकार सहमत नहीं हैं। कोई दक्षिण-एशिया या मलाया बताता है, तो कोई बर्मा। बहरहाल यह ज़रूर है कि आम गर्म वातावरण वाले देशों का फल है और ठंडे इलाकों में नहीं होता।

आम के पेड़ की ऊंचाई आमतौर पर 50 से 60 फुट की होती है। यह सदाबहार वृक्ष है। साल भर इस पर पत्ते बने ही रहते हैं। सूखे पत्ते झड़ते रहते हैं और उनकी जगह नए पत्ते आते जाते हैं। पत्तों का आकार तो तुमने देखा ही होगा। तीज-त्यौहार, शादी आदि के अवसर पर आम के पत्तों की वंदनवार बनाई जाती है। पूरा वृक्ष घना तथा लगभग अर्धचंद्राकार होता है। आम के पेड़ की अगर ठीक से देखभाल की जाए तो वह सौ साल तक फलता-फूलता है।

आम पर जब बौर यानी फूल आते हैं तो भीनी-भीनी गंध से वातावरण महक उठता है। आम के फूलों को मंजरी भी कहा जाता है। फूल लंबी टहनियों पर रस से भरे हुए, आकार में छोटे होते हैं।

आम का कच्चा फल, कैरी कहलाता है। कच्चे फल के भी ढेरों उपयोग हैं। कच्चे फल से चटनी बनती है, अचार डलता है और सुखाकर अमचूर भी बनाया जाता है। कच्चे आम को आग पर पकाकर उसका पना बनाया जाता है। पने का इस्तेमाल गर्मियों में लू लगने पर दवा की तरह किया जाता है। पका हुआ आम तो तुमने भी खूब खाया होगा। आम तो आम, उसकी गुठली भी खाई जाती है। शायद इसीलिए कहावत बनी, आम के आम गुठलियों के दाम।

वैसे आम के फलने और पकने का समय गर्मी के यही महीने हैं, पर अपने देश में यह साल भर फलता-फूलता रहता है। दक्षिण के समुद्रतट के इलाकों में ठंड नहीं पड़ती है सो वहां आम जाड़ों में भी फला करता है।

मुख्यतः आम दो तरह के होते हैं- कलमी और बिज्जू। जिस पेड़ को कलम लगाकर तैयार किया जाता है उसे कलमी कहते हैं। और जो फल की गुठली से उगाया जाता है उसे बिज्जू पेड़। दोनों ही तरह के पेड़ों की सैकड़ों क़िस्में हैं। कुछ क़िस्में ऐसी भी हैं जो साल में दो बार फलती हैं। इन्हें बारहमासी कहा जाता है।

आम जितना खट्टा-मीठा फल है उसके नाम भी वैसे ही हैं। जैसे दशहरी, लंगड़ा, बनारसी, नीलम, तोतापरी, बारहमासी, धूपफूल, जाफरान, सिंदूरी आदि।

आम की लकड़ी भी आम जितनी ही उपयोगी है। उससे चौकियां, अलमारी तथा अन्य फर्नीचर बनता है। □□□

खेल पहेली

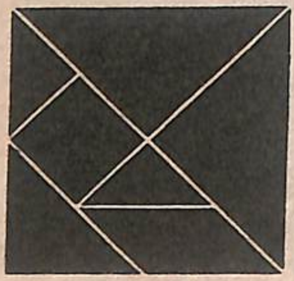

टेनग्राम के इन सात टुकड़ों को जोड़कर यहां दी गई विभिन्न आकृतियां बनी हैं। तुम भी बना देखो। (हल अगले अंक में)

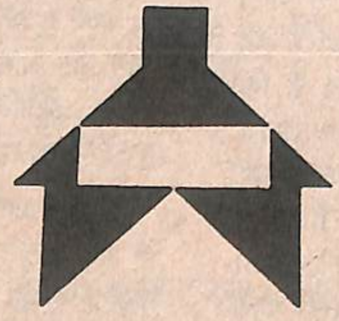

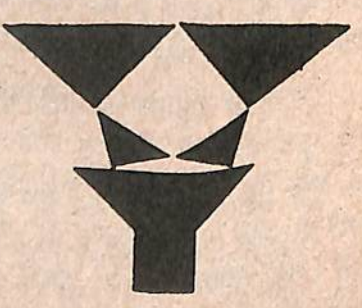

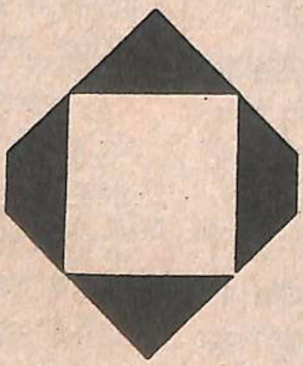

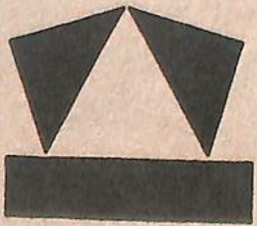

अप्रैल, 92 अंक के हल

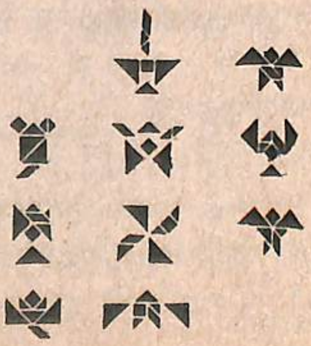

हमने मेला देखा!

घर के बिलकुल पास होने के बाद भी 'मेला' शब्द हमारे लिए बड़ा रोमांचक और कोतूहल की चीज़ था। क्योंकि कभी देखने का मौका ही न मिला था। दरअसल एक साथ सात-सात बच्चों को मेला घुमाने की कुब्बत पिता जी में तो थी नहीं और अलग-अलग जाने को कोई तैयार नहीं होता। क्या पता एक दूसरे के पीछे मेले का लाभ कौन कितना उठा जाए। इसके अलावा पहले जाने की होड़ भी हर एक में रहती, सो पिता जी झल्ला कर कह देते, ''रहने दो क्या करोगे मेला देखकर?''

कभी आपस में सब समझौता भी कर लेते तो पिता जी आज चलेंगे, कल चलेंगे, कह कर पूरा महीना गुजार देते। बस मेला देखने की चाह मन में ही दब जाती। वो तो भला हो हमारे फूफा जी का जिन्होंने मां के द्वारा दी गई 'कंजूस' की उपाधि से निजात पाने के लिए हम सबको एक साथ मेला दिखाने की ऐतिहासिक घोषणा कर डाली।

यह भी बताना ज़रूरी है कि इससे पहले फूफा जी सभी बच्चों को ज़रा कम ही अच्छे लगते थे। क्योंकि एक तो देखने में ही उनसे डर लगता, ख़ासा मोटा व ठिगना शरीर, गेहूंए सांवले चेहरे पर दूर से ही चमकती सफ़ेद मूंछें, तनी हुई सी आंखें और बंजर ज़मीन पर उगे इक्के- दुक्के तिनके की तरह सिर पर गिने-चुने बाल। चाल ऐसी कि दांया पैर उठता है तो बांईं और झुक जाते, और बांया पैर उठता तो दांईं ओर। इस तरह झूमती हुई चाल। आवाज़ बिगड़े हुए भोंपू की तरह भर्राई।

लेकिन डर वाली वास्तविक बात तो यह थी कि वे जब-तब हमें टोकते रहते, —''अरे दिन भर खेलते हो, पढ़ते नहीं? क्या बच्चे हैं आजकल के, हमारे जमाने में वो पढ़ाई होती कि पूछो मत। दिन भर सबक रटते बीत जाता, क्या मजाल कि भूल जाएं, मार के मारे नानी याद रहती थी हर समय.....भैया, (पिता जी से) बना लिएं तुमने बच्चे। इन पर अनुशासन न रखा तो ये तुम दोनों को नचाएंगे उंगलियों पर.....।''

बस पिता जी का क्रोध आंखों से उफनता और हम सबका खेलना-हंसना बंद। हम प्रार्थना करते हे भगवान, हमारे घर सब आएं पर फूफा जी नहीं आएं।

लेकिन इस अभूतपूर्व घोषणा से (मेला दिखाने की) हम सबके दिल में उन्होंने एक लंबा-चौड़ा मैदान तैयार कर लिया। उनके प्रति जमी शंकाओं को एकदम उखाड़ते हुए सब उनकी आवभगत में लग गए। सबके मन में करंट-सा दौड गया। आंखों

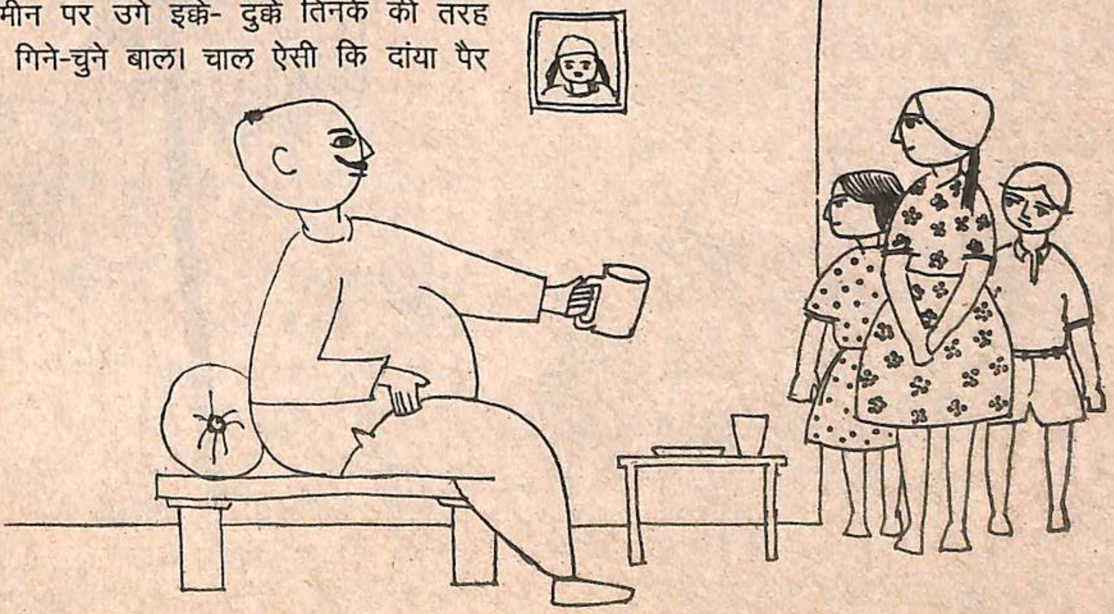

में बल्व जगमगाने लगे। मुनमुन दौड़ कर पानी ले आई। बब्बन चाय बनवा लाया। डबलू मना करने पर भी इलायची, सुपारी वाला डिब्बा उठा लाया। बुलबुल आसपास मंडराने लगी। घर भर में जैसे त्यौहार आ गया।

फूफा जी ने मां को पहले ही सुना दिया, ''भाभी कुछ पूरी-परांठे बनाकर रख देना, पार्क में बैठकर खाने का मज़ा ही कुछ और होता है।''

'वाह! फूफा जी को बच्चों की ख़ुशी का कितना ख्याल है।' सबने सोचा।

''और भैया! पहले ही सुन लो। पैदल चलेंगे। पूछो क्यों? पूछो---पूछो--।''

''क्यों?'' हम सब चिल्लाए।

''यों कि इसके दो फ़ायदे हैं। नंबर एक पैदल चलने से पैर व पेट दोनों मज़बूत होते हैं और नबंर दो-- जो पैसा हम किराए में ख़र्च करेंगे उससे कुछ बढ़िया चीज़ नहीं खरीद लेंगे?'' फूफा जी ने आंखें चमकाकर कहा।

''हां, फूफा जी बिलकुल ठीक कहते हैं।'' मेले की सही दूरी का ज्ञान न होने पर भी हमने समर्थन किया।

जिस समय घर से निकले किसी के पांव ज़मीन पर न थे। झूला, खिलौने, सर्कस, आइसक्रीम, गुब्बारे, मिठाइयां, चाट और न जाने कितनी नमकीन, मीठी कल्पनाएं करके हमारा दिल उछल कर बाहर आना चाहता था और हमसे पहले ही मेले पहुंच जाना चाहता था।

मेले में प्रवेश करने से पहले ही फूफा जी ने सबको गिना- मुन्ना, छुन्ना, बब्बन, डबलू, मुनमुन, चंपक, बुलबुल सात। मुन्ना तुम मुनमुन व डबलू को

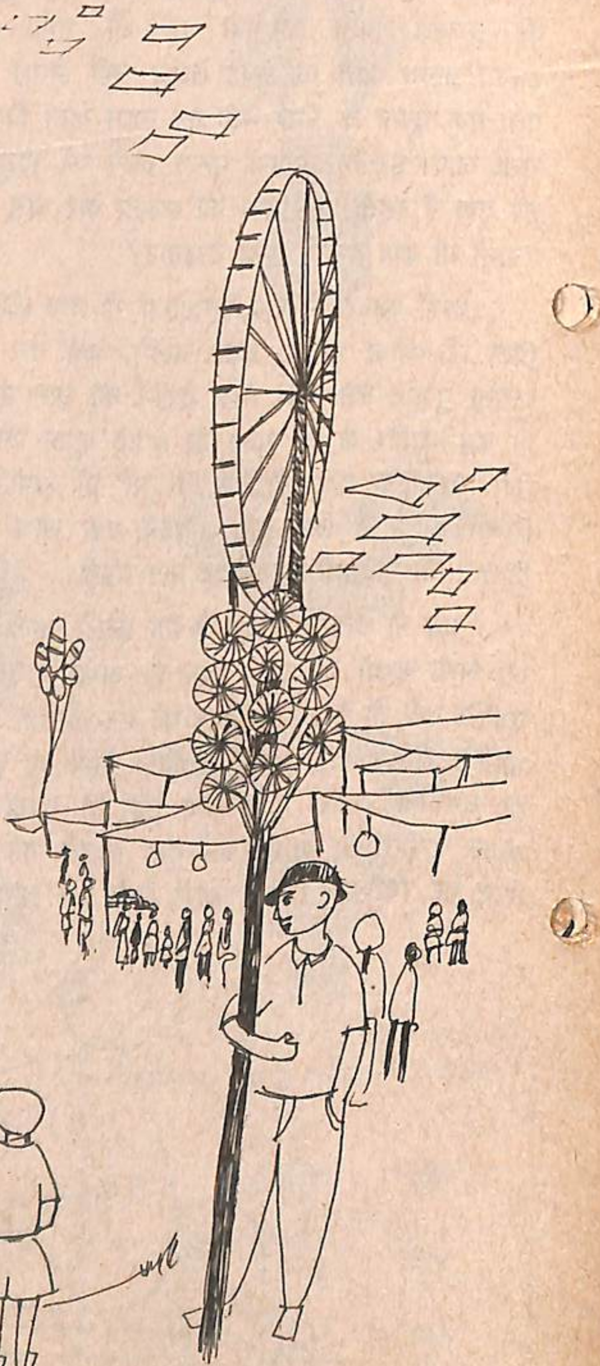

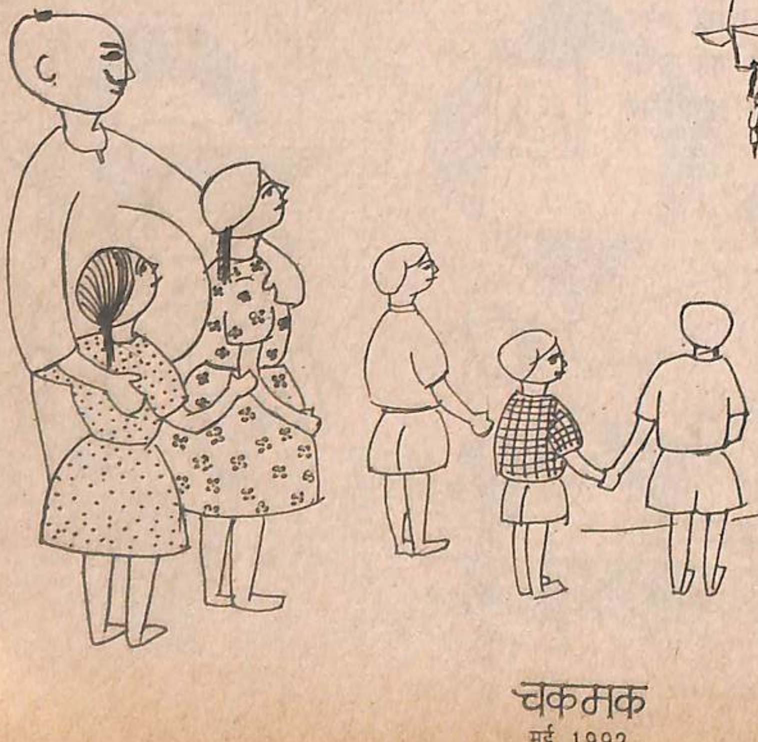

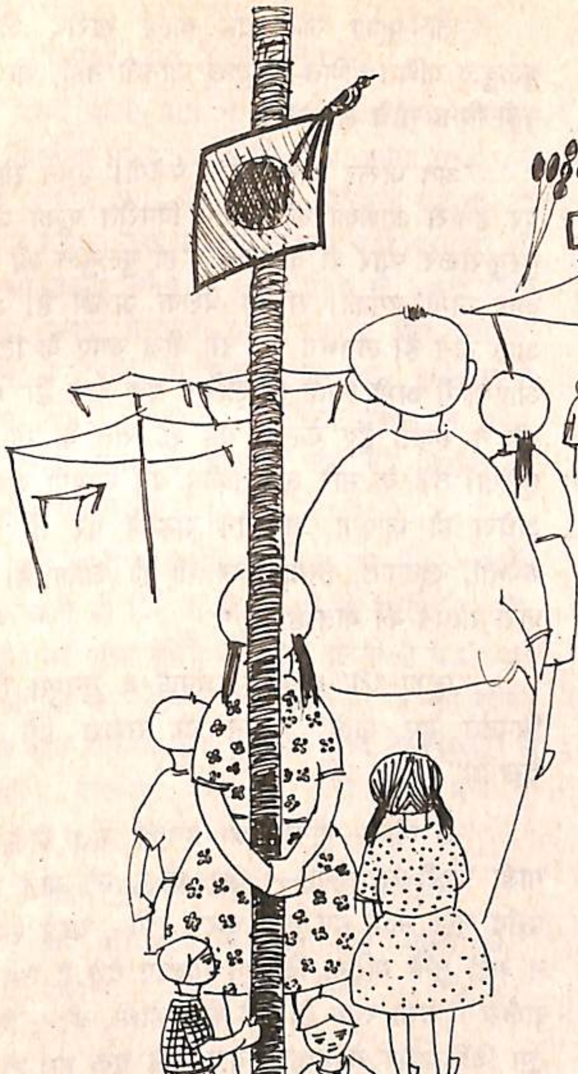

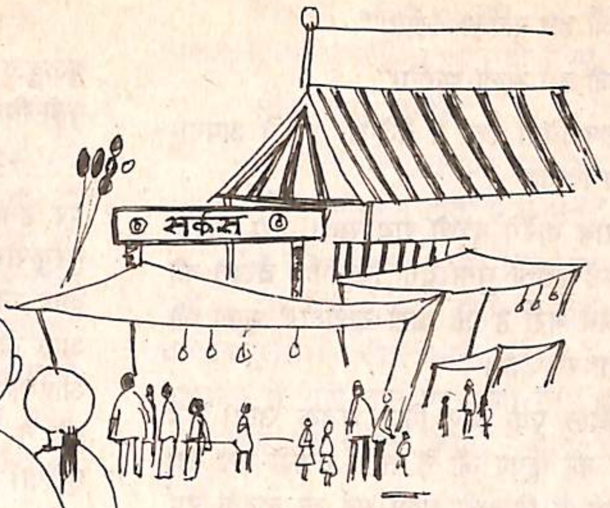

संभालो, छुन्ना तुम बब्बन को साथ रखो और चंपक, बुलबुल मेरे साथ। ध्यान रहे हाथ टूट जाए पर छूटे नहीं।' कहकर फूफा जी ने मुनमुन व डबलू को मेरे हाथ में दे दिया।

मेले में पहुंचकर हम दंग रह गए। इतनी भीड़? रंग-बिरंगे कपड़े पहने बेशुमार आदमी, औरत, बच्चे-- चारों ओर बड़ा शोर बड़ी आवाज़ें किसी को किसी की सुध नहीं। आंखें रास्ते में नहीं दुकानों पर थीं। खिलौने की दुकानें, कपड़ों, मिठाइयों, चाट, समोसों की दुकानें-- मूंगफली, गजक, खजूर व पेठे की दुकानें--- ओफ़ हम बड़े हैरान हमारी आंखें कभी खिलौनों में भटकें तो कभी मिठाइयों में अटकें----।

''पहले बच्चो घूम लो जी भर के। ख़ूब देखो दुकानें, नुमाइशें, तमाशे, झूले, बाद में ख़रीदेंगे---।'' फूफा जी ने प्यार से कहा।

फिर तो एक गली से दूसरी गली एक चौराहे से दूसरे चौराहे तक दो-दो चक्कर लगा डाले। फूफा जी हमें बताते भी जा रहे थे, ''देखो कितने सुंदर बर्तन हैं। वो देखो स्टील के ट्रंक, कितने मज़बूत---- उधर देखो बढ़िया साड़ियां, शाल, कंबल---- एक से बढ़कर एक--देखो स्कूल बैग--किसी को लेना तो नहीं---- यह कारों साइकिलों व स्कूटरों की दुकानें हैं और वो टी.वी.....फ्रिज.....सूटकेस...।''

''फूफा जी हमें भूख लग रही है।'' बुलबुल ने फूफा जी की बातों से उकताकर और सामने मिठाइयों की दुकान देखकर पैर घसीटते हुए कहा।

"भूख लगी है बेटे? तो चलो पहले उसी का इंतज़ाम किया जाए।"

''हम फूफा जी के पीछे-पीछे पार्क में पहुंचे। खाना खाते-खाते मुनमुन व चंपक के कान, पापड़ वाले की अवाज़ के पीछे लगे थे। फूफा जी फ़ौरन ताड़ गए। बड़े प्यार से समझाया, ''देखो बेटे बाज़ार की तली चीज़ें बड़ी नुकसानदायक होती हैं। कई तरह की बीमारियां हो जाती हैं। क्यों मुन्ना?''

मैंने लाचारी से समर्थन किया।

''अब कहां चलें बच्चो?'' फूफा जी हाथ झाड़ते हुए बोले।

''फूफा जी हम सर्कस देखेंगे।''

''फूफा जी हम झूला झूलेंगे।''

''और हम मिंनी रेल में बैठेंगे।'' सबने अपना-अपना मत पेश किया।

''सब, सब करेंगे बच्चो सब सब। ज़रा धीरज रखो--आज तुम्हें इतना घुमा दूंगा कि फिर देखने की इच्छा न हो। जेब भरी है जो चाहो ख़रीदो।" फूफा जी ने बड़ी उदारता से कहा।

हमारा दिल एक बार फिर धड़क उठा। बड़े झूलों में झूलने की फूफा जी ने साफ़ मनाही कर दी। कहा कि, ''बीच में बिजली चली गई तो लटके रह जाओगे और अगर टूट गया तो हाथ पैर या जान से भी हाथ धो सकते हो।''

हममें से कोई भी यह ख़तरा लेने को तैयार न था। मिनी रेल के बारे में बताया, ''यह सब पैसा ऐंठने की चाल है वरना इसमें क्या नई बात है। जैसे बड़ी रेलें वैसी यह भी--- बताओ तुम क्या बड़ी रेल में नहीं बैठे हो? इतने समझदार बच्चे भला ऐसी बचकानी हठ क्यों करेंगे।''

अब समझदार होने से तो कोई इंकार कर ही नहीं सकता सो फूफा जी हमें सर्कस की ओर ले गए। वास्तव में हम सबका आकर्षण भी वही था।

''ठहरो तुम लोग इस खंबे के पास खड़े रहो मैं टिकिट व समय का पता करके आता हूं। एक भी इधर- उधर न होना।'' फूफा जी कह कर चले गए।

हमारी ख़ुशी का पार न था। सर्कस सिर्फ़ सुना था पर देखा नहीं था। आज सब कुछ आंखों के आगे होगा। कोई पंद्रह मिनट बाद फूफा जी झूमते हुए लगभग दौड़ते-से आए। आकर जोश में बोले, ''मैं सब मालूम करके आया हूं। तीन तरह के टिकिट हैं, पच्चीस वाले, पंद्रह वाले और पांच वाले......।''

''अपन तो फूफा जी पांच वाले टिकिट ले लेंगे।'' चंपक बचत की सूझबूझ के साथ निहायत शराफ़त से बोला।

''लेकिन बरखुरदार पांच रुपए में तुम्हें इतनी दूर बैठना पड़ेगा जितना..वो...वो देखो बड़ा वाला झूला, समझ सकोगे कुछ?''

''तो फूफा जी पंद्रह वाला ख़रीद लेना।'' बुलबुल गणित-वणित तो कुछ जानती नहीं, सो बोल पड़ी बिना सोचे समझे।

'अब ज़रूर इसको डांट पड़ेगी।' हमने सोचा। पर हमारी आशंका के एकदम विपरीत फूफा जी ने मुस्कुराकर प्यार से कहा, ''हां बुलबुल की बात कुछ जमी हमको। सलाह बेशक अच्छी है। अपन आठ जने हैं। लगभग एक सौ बीस रुपए के टिकिट आएंगे। मैं अभी लाता हूं, लेकिन एक बात है।" फूफा जी ने रुकते हुए कहा। "यह शो रात के नौ बजे छूटेगा। ठंड के मारे आइसक्रीम बन जाएगी सबकी, अंधेरा हो जाएगा, सुनसान सड़कों पर तो चोरी डकैती, लूटपाट, हत्या कुछ भी हो जाता है। यह ज़रा सोचने की बात है।"

''फूफा जी''-बुलबुल, चंपक व मुनमुन उनसे चिपटते हुए बोले, ''रहने दो सर्कस हमें नहीं देखना।''

''ये लो--- सुनो मुन्ना इनकी बात जैसे-तैसे गाड़ी पटरी पर आई--- ख़ैर छोड़ो जो बात तुम्हें पसंद नहीं भला हम क्यों करने लगे-- चलो सर्कस न सही तुम्हें बढ़िया खिलौने दिलाए देते हैं वैसे भी सर्कस में क्या रखा है। वही शेर, हाथी, बंदर, जिन्हें तुम चिड़ियाघर में पचासों बार देख चुके हो। टी.वी. पर तो तुमने सर्कस देखा ही है उससे अच्छा तो इनकी सात पुश्तें नहीं दिखा सकतीं---। अब क्या किया जाए?''

क्योंकि फूफा जी मिनी रेल, बड़े झूले का पहले ही मना कर चुके थे इसलिए मेरा मन सिर्फ़ गुब्बारों पर निशाना लगाने का था।

''क्या मुन्ना तुम भी पढ़ाई-लिखाई छोड़ अब निशाना लगाओगे? क्या शिकारी बनकर चिड़िया कौवे मारना है? छिः यह भी कोई शौक़ है?'' फूफा जी ने मेरी इच्छा सुने बिना केवल नज़र देखकर ही सुना डाला।

अंत में हम लोग खिलौनों की दुकान पर पहुंचे। इतनी बड़ी दुकान में ढेरों खिलौने देख हमारा मन ललचा उठा। अगर वश होता तो पूरी दुकान

उठाकर घर ले जाते। फूफा जी ने हमें खुली छूट दे दी कि सब मन पसंद खिलौने चुन लें।

पसंद वाली बात में बड़ा झमेला हुआ। बब्बन कोई खिलौना पसंद करता तो छुन्ना अपना छोड़ उसे देखने लगता। अगर डबलू कोई खिलौना उठाता, तो छुन्ना व बब्बन उस पर टूट पड़ते। बड़ी मुसीबत थी कौन-सा उठाएं, कौन-सा छोड़ें। फिर भी काफ़ी संघर्ष के बाद डबलू ने चाबी वाला स्कूटर और स्टीमर; मुनमुन ने रसोई के बर्तनों का सेट; बुलबुल ने गुड़िया; चंपक ने भालू, खरगोश; बब्बन ने कार, हवाईजहाज; छुन्ना ने फुटबॉल और मैंने क्रिकेट का बैट और गेंद पसंद की।

"ये चाबी वाले खिलौने मत लो भइए--। क्या है कि चाबी दो दिन में ही ख़राब हो जाती है-- ख़ैर ले लो। पर मुन्ना तुमने यह क्या लिया है बैट? अरे यह अंग्रेज़ों का खेल है और हाथ-पैर व मुंह तोड़ने का बे चूक उपाय, ख़ैर तुम्हारी पसंद के खिलौने मैं वापस न करूंगा.... हां भई ज़रा बिल बना दो सबका--।"

"साब, कुल रुपए हुए एक सौ पैंतीस।"

"अरे यार सही पैसे लगा लो।" फूफा जी ने रौब से कहा।

"वैसे तो हमारी दुकान पर माल एक दाम बिकता है साहब लेकिन आप दो रुपए कम दे दो।"

"सत्तर रुपए लोगे?"

मेरा माथा ठनका। यह फूफाजी को क्या हो गया? कहीं इतनी कम होती हैं क़ीमतें?

"तू मत बोलना मुन्ना। तुझे कुछ समझ तो है नहीं--- अरे मेले में लूट होती है लूट-- लोग तिगुने दाम वसूलते हैं। सीधे आधी कीमत कम करोगे तब मुश्किल से सही दाम पर आते हैं।" मुझे समझाकर दुकानदार को सचेत किया, "बोल, निकालूं सत्तर रुपए?"

"नहीं साब— आप एक सौ तीस दे दीजिए।"

"सत्तर से इकहत्तर भी नहीं---।"

"तो रहने दीजिए आपने जो समझा है वो माल नहीं है।"

"अरे जा, घटिया ख़रीदने वाले देखे होंगे तूने। यहां तो साल में दस बार ऐसा ही बढ़िया माल ख़रीदते हैं।"

"कोई बात नहीं साब, आप कहीं और देख लीजिए।"

"देख सोच ले एक बार।"

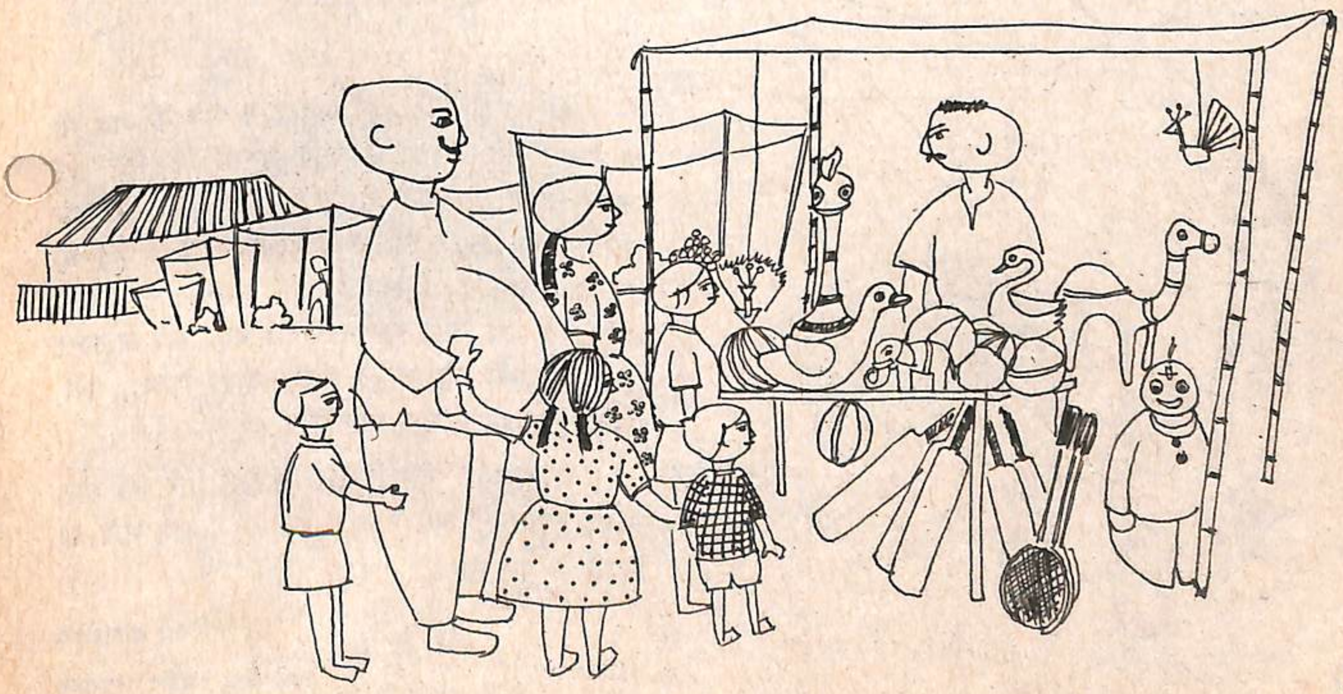

'शायद दुकानदार को कुछ अक्ल आ जाए।' हमने सोचा।

पर वह बिफर कर बोला, ''सोच लिया जनाब। एक बार नहीं बीस बार, आप किसी और को निहाल करो-- मेरा पीछा छोड़ो---।''

''हां, हां, जाते हैं-- क्या तू ही एक दुकानदार है, मेले में---पचासों दुकानदार हैं जो ख़ुशामद करके बुलाते हैं। फूफाजी ताव में हमें खींचते-से आगे ले गए।

सब मुड़-मुड़कर देख रहे थे। वे हमें समझाते रहे, ''देखो , बच गए वरना ठगे जाने में क्या कसर थी। मेरी जगह कोई ओर होता ले ज़रूर लेता। देता पूरे रुपए।

फिर फूफा जी सबको समेटे हर दुकान का निरीक्षण-सा करते घूमने लगे। कहीं चीज़ नहीं जमे तो कहीं दाम- -। मुनमुन अपने बर्तनों व चंपक अपने भालू, बंदर को भूल नहीं पाए। सो दोनों बोले, ''फूफा जी उसी दुकान से ख़रीद लो ना? बड़े अच्छे खिलौने थे।''

''अब जाकर क्या हमें नाक नीची करवानी है? वह क्या सोचेगा-- अरे तुम लोग मेरी मानो तो एक-एक गेंद ले लो--- न टूटे न फूटे, कितना ही उछालो, पटको बच्चों के लिए सबसे बढ़िया खिलौना है। देखो कृष्ण भी बचपन में गेंद से खेलते थे।--- देखो अगर उसी दुकान पर फिर पहुंचेगें तो उसके भाव नहीं बढ़ेंगे? अरे वह ठग था पूरा ठग---।''

इसके बाद फूफा जी हमें दुकानें दिखाते घुमाने लगे। और उन दुकानों पर जाकर मोल भाव करने लगे जो हमारे मतलब की ही नहीं थी, जैसे लोहे के बड़े बर्तन, बड़े बक्स आदि। मैंने हार कर कहा, ''फूफाजी घर चलिए ना? यों ही फिरते रहने से क्या फ़ायदा!''

''घर?''फूफा जी चमककर बोले। ''इतनी जल्दी मन भर गया----अरे और घूम लो--ख़ैर तुम सब का मन है तो चलो घर। मैंने तो कहा था कि घर तब चलेंगे जब तुम्हारा मन भर जाएगा।''

रास्ते में कह रहे थे, ''देखो बच्चो, कितना मज़ा आया मेले में?''

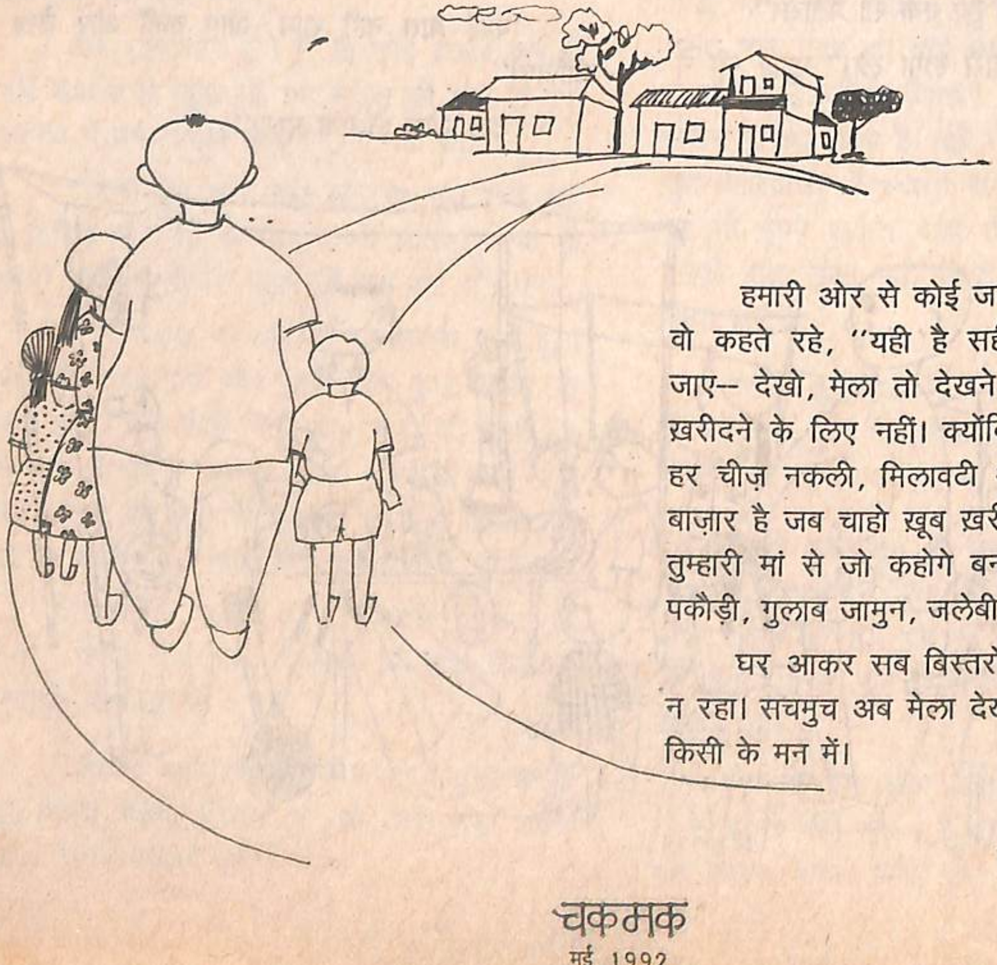

हमारी ओर से कोई जवाब न पाने के बाद भी वो कहते रहे, ''यही है सही घूमना कि मन भर जाए-- देखो, मेला तो देखने के लिए होता है कुछ ख़रीदने के लिए नहीं। क्योंकि वहां लूट मचती है। हर चीज़ नकली, मिलावटी और मंहगी----- अपना बाज़ार है जब चाहो ख़ूब ख़रीदो। चलो घर चलकर तुम्हारी मां से जो कहोगे बनवा दूंगा। हलवा, पूरी, पकौड़ी, गुलाब जामुन, जलेबी।''

घर आकर सब बिस्तरों में ऐसे गिरे कि होश न रहा। सचमुच अब मेला देखने की तमन्ना नहीं थी किसी के मन में।

❑ गिरिजा कुलश्रेष्ठ

सभी चित्र : प्रवीण नगरकर

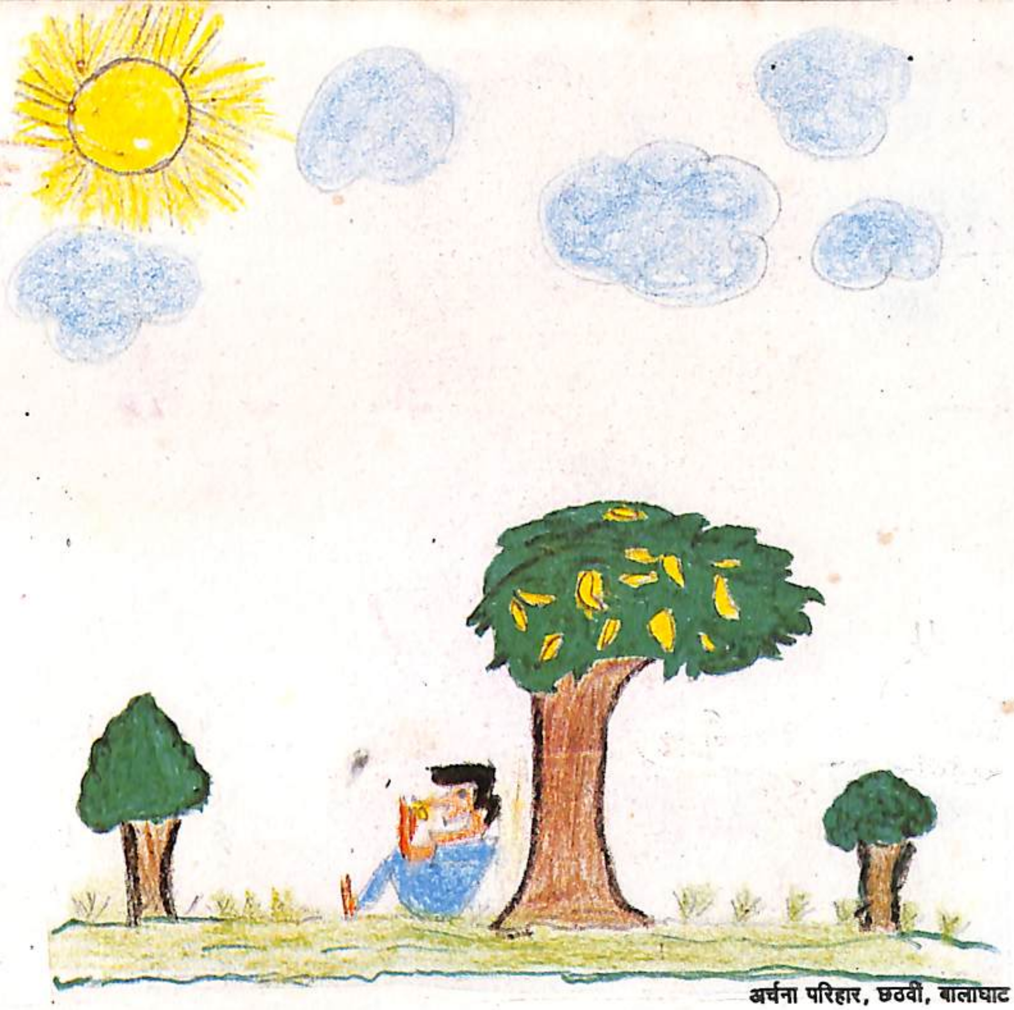

अर्चना परिहार, छठवीं, बालाघाट

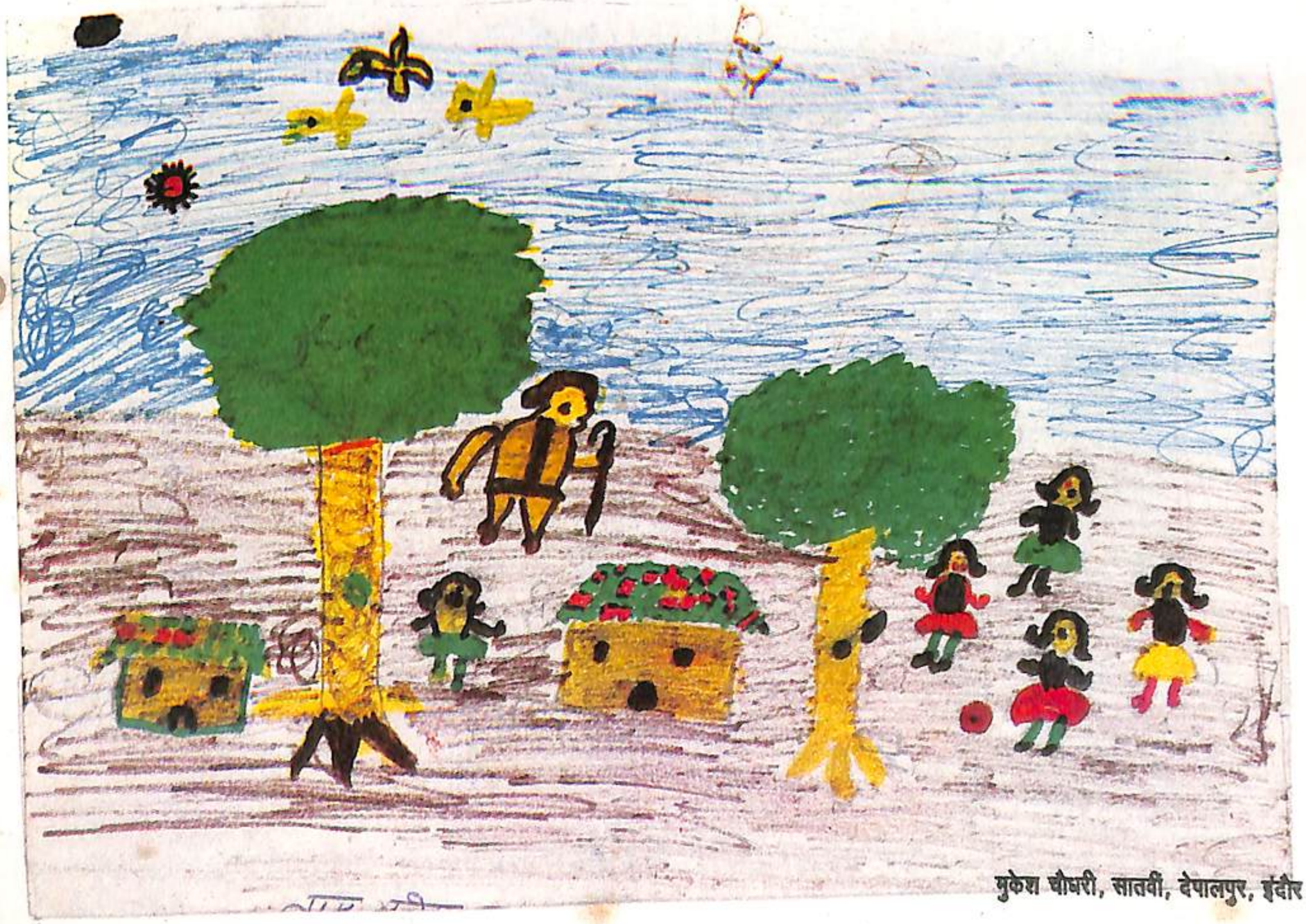

मुकेश चौधरी, सातवीं, देपालपुर, इंदौर

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमाक BPL/DN/MP/431/92

दिव्या चेरियन, तीसरी, दिल्ली

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना